॥श्रीमद् रामचरणाय नमः॥ ॥श्रीमद् रामदयालाय नमः॥

श्री रामस्नेही भास्कर

ग्रन्थ नाम-प्रताप(सचित्र) विशेषाङ्क

: प्रकाशक :

श्रीराम निवास धाम ट्रस्ट

शाहपुरा (भीलवाड़ा) राजस्थान. फोन-(01484) 222246, 222218

Scanned by CamScanner

।।राम।।

आशीर्वचन

राम नाम ध्रुव ध्यान लगावै, बसि बैकुण्ठ बहुर नहिं आवै।
राम भजत छूटा सब कर्मा, चन्द्र अरु सूर्य देय परिकर्मा।।

भारतीय धर्म दर्शन एवं तत्त्व चिन्तन में वेद संहिताओं, उपनिषदों– पुराणों के ज्ञान, काव्य एवं कर्मकाण्ड का अद्‌भुत समवाय सम्मिलन है। तपः पूतात्म मंत्र दृष्टा ऋषिगण गंभीर निदिध्यासन फलस्वरूप सर्वप्रथम निर्गुण निराकार परब्रह्म का साक्षात् कर जगत प्रपंच को उसका लीला विलास मानते है। यह धारा उपनिषद् काल तक यथावत प्रवाहित होती रहती है। ब्राह्मण काल में 'यज्ञो वैः ईश्वर' की अनुगूंज श्रवणीय होती है, जो कि युगधर्म के प्रभावशात कर्मकाण्डीय अतिवादित में परिणत हो। परम शांत एवं परम पुरुषार्थ समुपलब्धि हेतु एक प्रश्नचिन्ह समुपस्थित करती है। तथा भारतीय दार्शनिक प्रकृति पुरुष अभिज्ञान, पदार्थ ज्ञान, प्रभाव ज्ञान का पाथेय प्रस्तुत करते है, परन्तु साधारण मुमुक्षुजन उक्त मार्गो के अनुसरण के विषय में स्वयं को दिग्भ्रमित किंकर्त्तव्यविमूढ़ अनुभव करते हुए अन्ततः परम पुरुषार्थ विषयक चिंतन से स्वयं को उपरत कर लेता है, जिसकी अंतिम परिणति भारतीय समाज, संस्कृति, सभ्यता के हाथ एवं मनुज के आध्यात्मिक एवं नैतिक पतन के रूप में दृष्टिगत होती है।

ऐसे ही विकट समय में निर्गुण ब्रह्मानन्द रस रसिक राम नाम रसामृत निमग्न स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु 'राम नाम ध्रुव ध्यान लगावै....' का सरल--सहज–सर्वजनवेद्य मौलिक सिद्धान्त **'नाम प्रताप'** के माध्यम से प्रस्तुत कर प्राणिमात्र को राम नाम साधना में प्रवृत्त होने का शाश्वत संदेश प्रदान करते है।

नाम स्मरण में वय–वित्त–वर्ग–विवेक–स्थान बाधक नहीं है। प्रहलाद, वाल्मीकि, रैदास, कबीर इस तथ्य के साक्षात् उदाहरण है। मानव मात्र यदि राम नाम रसामृत पान में प्रवृत्त हो तो निर्वाण, सहज रूपेण स्वतः अधिगत हो जायेगा।

दृश्य का प्रभाव अमिट हुआ करता है, इसी तथ्य को अंगीकार कर रामस्नेही भास्कर पत्रिका परिवार के साधु प्रयासों से **''ग्रन्थ नाम प्रताप''** इस वर्ष सचित्र सरलार्थ सहित विशेषांक के रूप में राम रस रसिक जनों को उपलब्ध कराया जा रहा है। हमारे राम हार्दिक मंगल कामना करते है कि बहुरंगी होली के त्यौहार पर आप सभी समस्त अखिल ब्रह्माण्ड जनक परब्रह्म परमेश्वर राम के अमिट रंग से सरोबार हो अपने जीवन को सफल बनावें।

शुभ चिन्तक..

पीठाधीश, अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय,
रामस्नेही नगर, शाहपुरा (भीलवाड़ा)

Scanned by CamScanner

।।श्रीमद् रामचरणाय नमः।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नमः।।

डाक पंजीयन संख्या–भीलवाड़ा/261/2009–2012 आर.एन.आई. सं.–56167/92

रमतीत राम गुरुदेव जी, पुनि तिहुं काल के संत।
जिनकूं रामचरण की, वन्दन बार अनन्त।।

श्री रामस्नेही भास्कर मासिक पत्रिका

(संस्थापक–ब्रह्मलीन आचार्य श्री रामकिशोर जी महाराज)

वर्ष–18, अंक : 2–3
फरवरी–मार्च 2009

संचालक व दिशा निर्देशक

जगद्गुरु स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज

आचार्य श्री, अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय, शाहपुरा (भीलवाड़ा) राज.

प्रकाशक
श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट
शाहपुरा (भीलवाड़ा) राज.
01484.222246

सम्पादक
डॉ. केशव पथिक
मो.–9252450456

प्रबन्ध सम्पादक
विजय त्रिपाठी
मो.–9414110161

मुदक
सिद्धार्थ ऑफसेट, शाहपुरा. फोन–9214970685

डिजाईनिंग–कम्पोजिंग
गुणाकर – 9461531862

–: भास्कर का शुल्क :–

संरक्षक	आजीवन	वार्षिक	विशेषाङ्क
5001/–	501/–	151/–	51/–

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र शाहपुरा (भीलवाड़ा) होगा।

Scanned by CamScanner

।।राम।।

दो टीपी बात

जिन–जिन सुमर्‌या नाम कूं, सो सब उतर्‌या पार।
रामचरण जो बीसर्‌या, सो ही जम के द्वार।।

निर्गुण सन्त महात्माओं एवं साधकों ने नाम स्मरण को ही मोक्ष का एक मात्र साधन स्वीकार किया है। नाम वह शक्ति है जिसके सहारे सभी भवसागर से आसानी से पार हो जाते है और जो इसे भूल जाता है उसकी उपस्थिति अनिवार्य रूप से यम के द्वार पर होती है।

स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु के लघु ग्रंथों में ''नाम–प्रताप'' दूसरा महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस लोकप्रिय ग्रंथ में 8 दोहे तथा 72 चौपाईयाँ है। अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय के वार्षिक महाकुम्भ ''फूलडोल'' में इस ग्रंथ का पाठ आध्यात्मिक जनसभा में होता है। पाठ का कार्यक्रम सदियों से चला आ रहा है।

नाम–स्मरण के प्रताप अर्थात् तेज से अनेकानेक देवीदेवताओं, संत महात्माओं, आचार्यो एवं पुराण पुरुषों का जीवन अवश्य प्रभावित हुआ जिसका वर्णन इस ग्रंथ में किया गया है। जिन्होनें भी नाम स्मरण किया सद्‌गति प्राप्त की। उनकी अन्तर्कथा इस ग्रन्थ में है। जैसे :–

राम नाम प्रहलाद पुकार्‌यौ, ताको पिता बहुत पच हार्‌यौ।
संकट सह्‌यो पण राम न छांड्‌यो, राम भरोसे मरणोही मांड्‌यौ।।
द्विज अजामिल मद मांस अहारी। गणिका रत विषया अति भारी।
कर्म करत तृप्ति नहिं भयो। विषय संग आयु क्षीण ह्वै गयो।।
अन्त समय जम दूतन घेर्‌यो। राम नारायण सुत के हित टेर्‌यो।
जम दूतन सूं लियो छुड़ाई। अपणो जाणरु करी सहाई।।

कस्तूरी को यदि कोई सौगन्ध दिला दे कि तुम सुगन्ध मत फैलाओ तो क्या वह रुक जायेगी? सुगन्ध तो फैल ही जायेगी। इसी तरह यदि कोई चुपचाप नाम–साधना करें और किसी को भनक तक नहीं लगे तो भी महाराज ब्रह्म तो प्रकट हो ही जायेंगे।

भजन करे पाताल में, परगट होत अकास।
दाबी दूबी नहिं दबे, कस्तूरी की बास।।

राम नाम की महत्ता का जितना वर्णन किया जाये वह कम है। नाम जप में इतना प्रभाव है कि भगवान स्वयं प्रहरी बनकर नाम जपने वाले भक्तों की रक्षा करते है।

Scanned by CamScanner

सुमिरि पवन सुत पावन नामा।
अपने बस करि राखेउ रामा।।

इस कलिकाल में इतना ही जानना और मानना पर्याप्त है कि भगवन्नाम –जप एक कल्पवृक्ष है, जिसके द्वारा जीवन में आने वाले सर्व संकट कट जाते है और मनोवांछित फल भी प्राप्त हो जाता है। इस कलियुग में न कर्म है, न भक्ति या ज्ञान है; राम नाम जप ही एक मात्र आधार है।

अतः अपने दैनिक कर्त्तव्यों के साथ राम नाम–जप का नियम बना लेना चाहिये–

नाम काम तरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला।
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।।
नहिं कलि करम न भगति विवेकू। राम नाम अवलंबन एकू।।

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय, शाहपुरा (भीलवाड़ा) की मासिक पत्रिका "**श्री रामस्नेही भास्कर**" के संचालक एवं दिशा निर्देशक वंदनीय अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज (पीठाधीश्वर) ने "**ग्रन्थ नाम प्रताप**" को सचित्र भावार्थ सहित फूलडोल–2009 विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का आदेश रामस्नेही भक्तों के हित में किया। जो सराहनीय और सामयिक है।

"**ग्रन्थ नाम–प्रताप**" एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, इसे प्राचीन सचित्र हस्तलिखित पाण्डुलिपि से प्राप्त कर "**श्री रामस्नेही भास्कर**" के फूलडोल–2009 के विशेषांक के रूप में प्रकाशित कर पाठकों के हाथों में पहुँचा रहे है। आशा है पाठक इस विशेषांक की अन्तर्कथा को जीवन में ग्रहण करेंगे।

रामचरण भज राम कूं, ब्रह्म देश कूं जाय।
जहां जम जोरा का भय नहीं, सुख में रहे समाय।।
रामचरण कहै राम को, बड़ो प्रताप जग मांहि।
अनन्त कोटि जन ऊधर्या, भजै सो भरमे नांहि।।

डॉ. केशव 'पथिक'
सम्पादक

Scanned by CamScanner

स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु शिष्यों एवं जिज्ञासुओं को
नाम प्रताप महिमा श्रवण करवाते हुए।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

ग्रन्थ नाम प्रताप

स्तुति

रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहूं काल के संत।
जिनकूं रामचरण की, बन्दन बार अनन्त।।

सरलार्थ : अखिल विश्व में रमण करने वाले राम, सतगुरुदेव एवं भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों ही काल में अवतरित होने वाले संतों के पावन श्री चरणों में, मैं (रामचरण) अनन्त बार श्रद्धा–पूर्वक वन्दन करता हूं।

दोहा

महिमा नाम प्रताप की, सुणो श्रवण चित्त लाय।
रामचरण रसना रटो, तो कर्म सकल झड़ि जाय।।1।।

सरलार्थ : मैं रामचरण राम नाम के महत्व का वर्णन करता हूं, अतः राम के स्नेहीजनों एकाग्र चित्त से श्रवण करें। जो प्राणी राम नाम को अपनी जिह्वा से स्मरण करते है। उनके समस्त अशुभ कर्म नष्ट हो जाते है।

जिन जिन सुमर्‌या नाम कूं, सो सब उतर्‌या पार।
रामचरण जो बीसर्‌या, सोही जम के द्वार।।2।।

सरलार्थ : जिन–जिन भक्तजनों ने राम के नाम का श्रद्धा पूर्वक स्मरण किया है, वो संसार सागर से पार हो गये है। और जिन्होनें राम के नाम का स्मरण नहीं किया अथवा राम के नाम को भूल गये है, वो प्राणी यमराज के अतिथि बनते है।

चौपाई

राम नाम कूं जिन जिन ध्यायो, भव कूं छेद परम पद पायो।
शिवजी निशदिन राम उचारे, राम बिना दूजो नहीं धारे।।1।।

सरलार्थ : जिन–जिन प्राणियों ने राम नाम ध्यान किया, उन्होनें आसानी से भवसागर को पार करके मोक्ष को प्राप्त कर लिया। अखिल विश्व के चराचर प्राणियों का कल्याण करने वाले भगवान शिव है, वे भी (शिव) रात दिन राम नाम का ही जप करते है, अन्य किसी का जप नहीं करते।

पार्वती कूं राम सुनायो, राम बिना सब झूंठ बतायो।
सोही राम सुण्यो शुक देवा, गर्भवास में लाग्यो सेवा।।2।।

Scanned by CamScanner

भगवान शंकर का पार्वती को राम नाम का महत्व समझाना एवं नामोपदेश प्रदान करना।

Scanned by CamScanner

सरलार्थ : कैलाशपति भगवान शिव ने सर्वप्रथम राम नाम का महामत्र पार्वती को दिया, और मंत्रोपदेश देते समय भगवान शिव ने पार्वती से कहा–हे पार्वती! राम नाम के बिना सम्पूर्ण जगत मिथ्या है। उसी मंत्र को शुकदेवजी ने सुनकर अपनी माता के गर्भ में बारह वर्ष तक जप किया।

राम सुमिर सब मोह निवार्‌यौ, मात पिता तज बन ही सिधार्‌यो।
राम प्रताप रंभा गई हारी, सुमिरत राम कामना मारी।।3।।

सरलार्थ : शुकदेवजी ने उसी राम नाम की कृपा से संसार के बीज भूत शोक एवं मोह को निवृत कर दिया और अपने माता पिता को छोड़कर वन में चले गये।

उसी परम पिता राम की कृपा से शुकदेव जी ने तपस्या भंग करने के लिये आई देवांगना रम्भा को पराजित करके विश्व विजयी मकरध्वज पर भी विजय प्राप्त की एवं सम्पूर्ण वैषयिक कामनाओं को शांत कर लिया।

ब्रह्मा पुत्र च्यार सनकादिक, राम नाम के भये स्वादिक।
राम प्रताप गर्भ नहीं आवै, सुमरत राम परम सुख पावै।।4।।

सरलार्थ : सृष्टि के रचियता परमेष्ठी ब्रह्मा के सर्व प्रथम मानसिक सृष्टि द्वारा उत्पन्न सनकादि चार पुत्र हुए, उन्होनें भी राम नाम रूपी अमृत का पान किया। इसी राम नाम के प्रताप से प्राणी का मातृस्तन छूट जाता है और स्मरण मात्र से परम पवित्र धाम को प्राप्त कर लेता है।

राम नाम नारद मुनि गावै, हृदय प्रेम अति प्रेह बधावै।
शेष रसातल राम पुकारै, रसना लिव कबहूं नहिं टारै।।5।।

सरलार्थ : देवर्षि नारद भी अपने हृदय में प्रेम बढ़ाते हुए प्रतिदिन अपनी वीणा द्वारा राम नाम का गुणगान करते है एवं मुमुक्षुजनों के हृदय में भी स्नेह वृद्धि कराते है।

अखिल विश्व के भार को धारण करने वाले भगवान शेष (सहस्त्र फनों के सर्पराज) भी राम नाम का स्मरण करते है और क्षण मात्र के लिए भी अपनी जिह्वाओं को विश्राम नहीं देते।

उभय सहस रसना है जाकै, राम राम रटता नहिं थाकै।
नर नारी सुमरे नहिं रामा, एक ही जीभ भई बेकामा।।6।।

सरलार्थ : सहस्त्र जिह्वाओं के स्वामी भगवान शेष राम नाम का जप करते हुए कभी नहीं थकते, तो जो नर नारी अपनी एक जिह्वा से राम के नाम का स्मरण नहीं करते है उनकी एक मात्र रसना बेकार है।

Scanned by CamScanner

गर्भ से निकलते ही शुकदेव जी द्वारा राम भजन हेतु वन में जाने की इच्छा प्रकट करना, माता–पिता द्वारा उन्हें समझाना।

Scanned by CamScanner

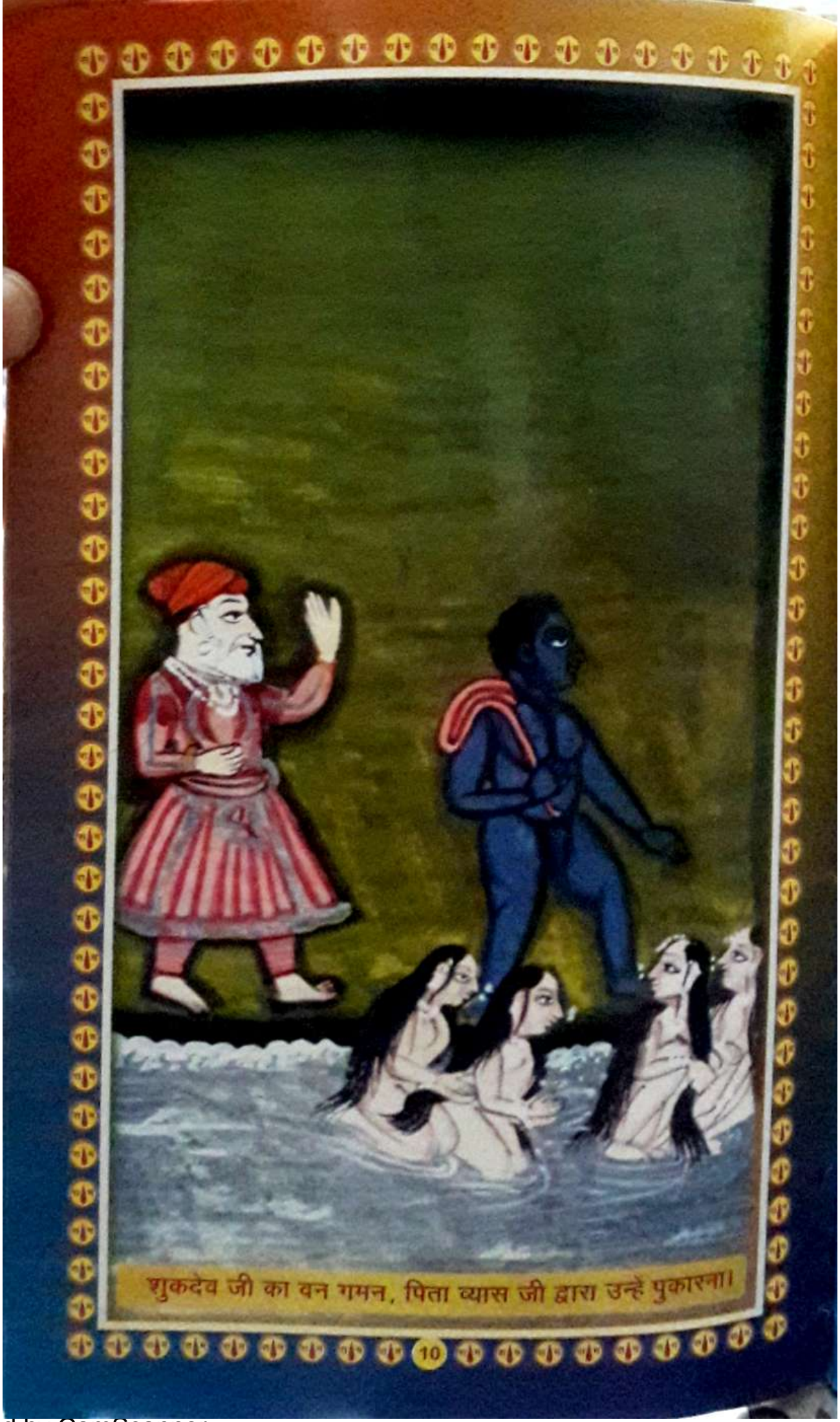

शुकदेव जी का वन गमन, पिता व्यास जी द्वारा उन्हें पुकारना।

Scanned by CamScanner

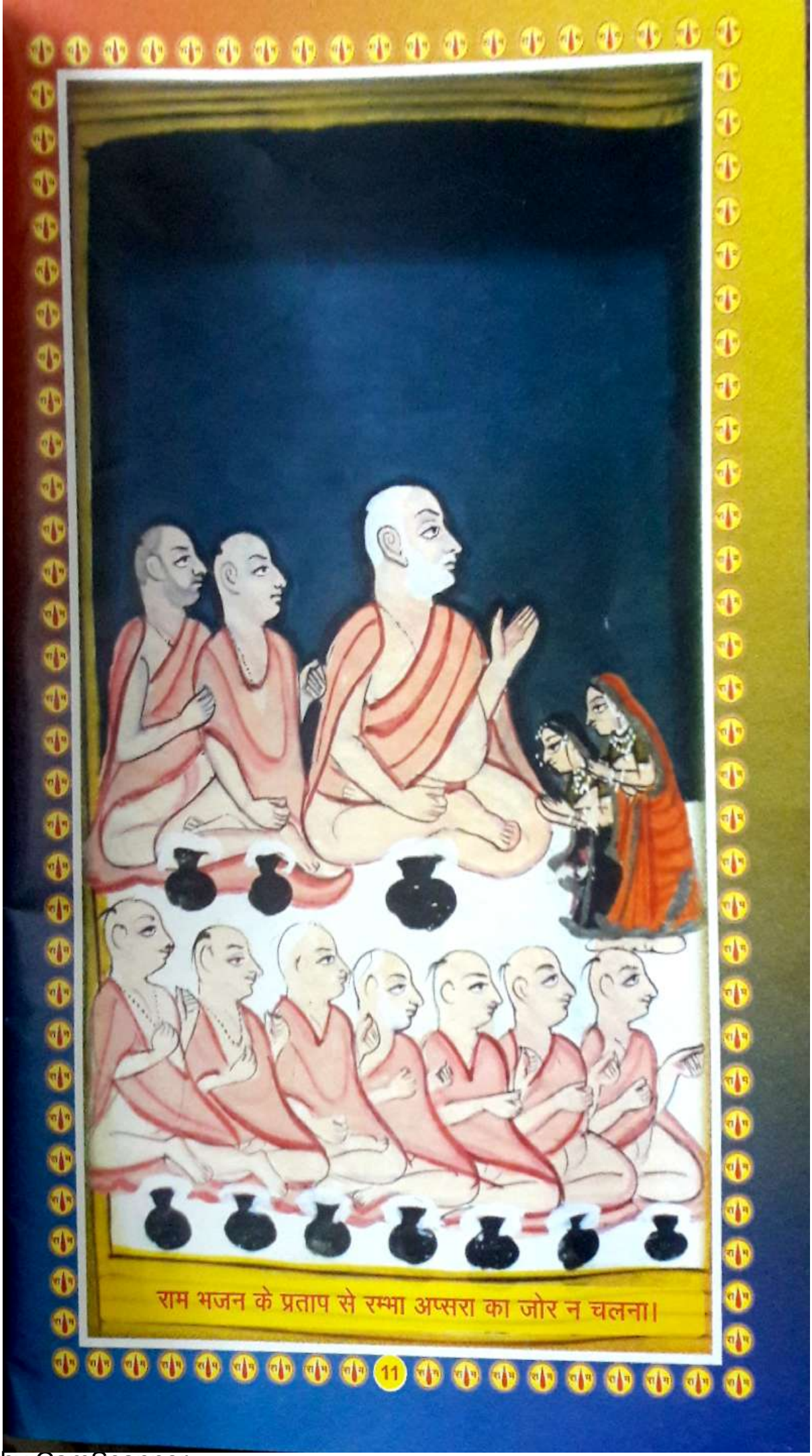

राम भजन के प्रताप से रम्भा अप्सरा का जोर न चलना।

Scanned by CamScanner

ब्रह्मा जी के मानस पुत्र सनकादिक ऋषि राम नाम के
अमित महत्व का आपस में बखान करते हुए।

Scanned by CamScanner

नारद मुनि द्वारा राम स्मरण।
शेषनाग जी द्वारा अपनी सहस्त्रों जिह्वाओं से राम स्मरण करना।

Scanned by CamScanner

जो स्त्री–पुरुष राम का नाम न लेकर अन्य वार्ता
एवं कार्य करते हैं, उनकी जिह्वा का होना निरर्थक है।

Scanned by CamScanner

राम नाम ध्रुव ध्यान लगावै, बसि बैकुण्ठ बहुर नहिं आवै।
राम भजत छूटा सब कर्मा, चन्दरू सूर देय परिकर्मा।।7।।

सरलार्थ : संसार परिवर्तन शील होने से उसकी वस्तुएं भी परिवर्तित होती है। लेकिन भक्त ध्रुव राम नाम के प्रताप से अटल पद प्राप्त कर सभी कर्मो के बन्धन से मुक्त हो गये।

उसी राम नाम के प्रताप से चन्द्रमा और सूरज ध्रुव जी की अनवरत परिक्रमा करते है।

राम नाम प्रहलाद पुकार्‌यौ, ताको पिता बहुत पच हार्‌यौ।
संकट सह्‌यो पण राम न छांड्‌यो, राम भरोसे मरणोही मांड्‌यौ।।8।।
अग्निधार परबत सूं राख्यौ, सिंह, सर्प, गज परिहरि नाख्यौ।
अंध कूप में राम बचायौ, जन को जश हरि जग दिखलायौ।।9।।
कोप्यौ असुर खड्ग लियो कर में, जन के हित प्रगट्‌यौ हरिखंभ में।
मार्‌यौ असुर भक्ति विस्तारी, जन प्रहलाद की मीच निवारी।।10।।

सरलार्थ : भक्त प्रहलाद ने राम नाम के प्रताप से राक्षस कुल को उज्ज्वल कर दिया। उसे पिता दैत्यराज हिरण्यकश्यपु ने राम नाम को छुड़ाने के लिए अग्निधारा, पर्वत पतन, सिंह, सर्पादि ग्रास, गज (हाथी) कुचलन तथा अन्य यातनाएं देकर महान कष्ट दिये। यहां तक कि पिता हिरण्यकश्यपु अपने ही हाथों से अपने पुत्र को हाथों में तलवार लेकर मारने को तैयार हो गया। लेकिन बालक भक्त प्रहलाद ने राम नाम का परित्याग नहीं किया।

भगवान अपने भक्त की रक्षा करते है। अद्‌भुत रूप धारण करने वाले भगवान ने नृसिंह अवतार लेकर हिरण्यकश्यपु का उद्धार कर अपने भक्त प्रहलाद को कष्टों से मुक्त कर उसके यश को तीनों लोकों में स्थापित किया।

राम कहे तिनकूं भय नांहि, तीन लोक में कीरति गाहिं।
राम रटत जम जोर न लागै, राम रटत शांसो सब भागै।।11।।

सरलार्थ : राम नाम के स्मरण करने वाले प्राणी को लोक एवं परलोक आदि का भय एवं संशय आदि के रोग नहीं होते। और उसकी महिमा तीनों लोकों में बढ़ती है।

Scanned by CamScanner

भगवान कृष्ण द्वारा राम नाम का उपदेश देना।

ध्रुव जी द्वारा रामनाम का ध्यान करना एवं सूर्य–चन्द्रमा द्वारा उनकी परिक्रमा करना।

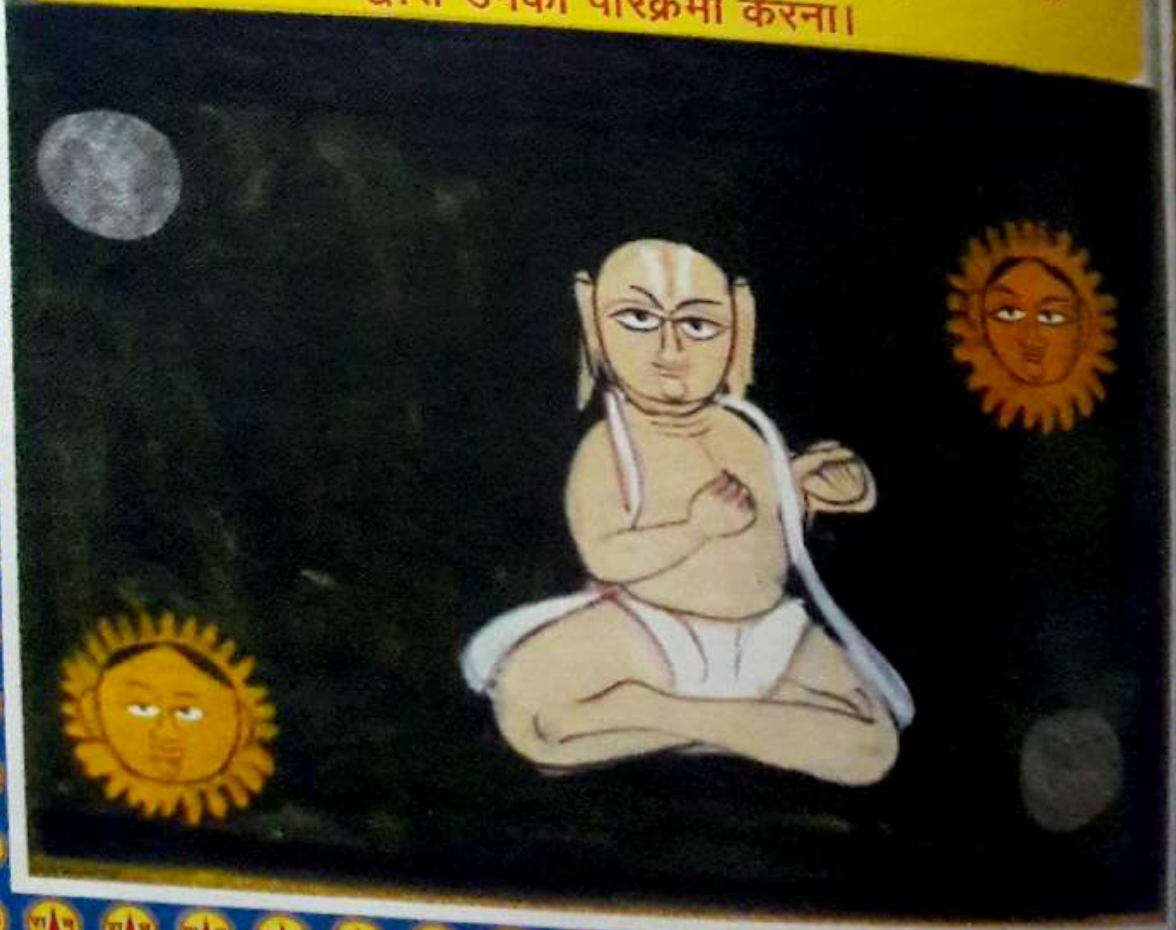

Scanned by CamScanner

हिरण्यकश्युप द्वारा भक्त प्रहलाद को राम नाम लेने से मना करना।
नहीं मानने पर अग्नि, सर्प, शेर, हाथी द्वारा यातनायें देना।

Scanned by CamScanner

हिरण्यकश्यपु द्वारा प्रहलाद जी को तलवार लेकर मारने का प्रयत्न करना एवं भगवान द्वारा नृसिंह रूप धारण कर हिरण्यकश्यपु का उद्धार

Scanned by CamScanner

द्विज अजामेल मद मांस अहारी, गणिका रत विषया अति भारी।
कर्म करत तृप्ति नहिं भयौ, विषय संग आयु क्षीण व्हे गयौ।।12।।
अन्त समय जम दूतन घेर्‌यौ, राम नारायण सुत के हित टेर्‌यौ।
जम दूतन सूं लियौ छुड़ाई, अपणो जाणरू करी सहाई।।13।।
ऐसो पतित और नहिं कोई, राम कह्यां वाकी गति होई।
अजाण भज्यां का एह सहनांणा, तो जांण भज्यां का कहा बखाणा।।14।।

सरलार्थ : अजामिल ब्राह्मण दुर्व्यसनी था, जिसने नगर वधु के कुसंग में अत्यन्त विषयान्ध बनकर सत्कर्मो का परित्याग करके अपने अमूल्य जीवन को समाप्त प्राय: कर दिया। प्राणान्त के समय उसे यमदूतों ने आकर घेर लिया, तब उसने डरकर अपने छोटे बेटे रामनारायण को पुकारा, तो उसी समय नारायण के दूतों ने उसे अपने स्वामी का भक्त समझकर यमदूतों से छुड़ाया एवं विष्णु लोक ले गये।

ऐसे अधम प्रकृति वाले अजामिल ब्राह्मण की अनजान अवस्था में नाम जप से सुगति हो गई, तो जो प्राणी जानबूझ कर राम नाम के महत्व को समझ उसका स्मरण करते है तो उनका कहना ही क्या!

गणिका एक गरक कर्मन में, हरि की शंक नहिं कुछ मन में।
जाकूं संता सैन बतायौ, राम राम कही कीर पढ़ायौ।।15।।
सुवा पढ़ावत विषया भूली, राम प्रताप सुख-सागर झूली।
राम प्रताप जुग जुग में गावै, मूरख नर कोई भेद न पावै।।16।।

सरलार्थ : एक अत्यन्त विषयासक्त प्रवृत्ति की गणिका थी, उसके पास एक शुक शावक (तोता) था, वह उसके साथ प्रतिदिन मनोविनोद किया करती थी, भाग्यवश प्रभु कृपा करके शुकदेव जी के समान महात्मागण भिक्षा लेने के लिए उस गणिका के घर पर आये। उन्होनें उस गणिका को राम नाम महामंत्र का संकेत दिया, और उस गणिका ने शुक शावक को विनोदार्थ राम नाम पढ़ाते हुए अपने अपने जीवन का कल्याण किया।

युग युग में राम नाम का प्रबल प्रताप है, कि जिस गणिका को नारायण एवं मृत्यु का तनिक भी भय नहीं था, जो अपने जीवन में विषयों को ही परम आनन्द समझा करती थी, उसी गणिका ने राम नाम के प्रताप से विषयों को भूलकर परमपद को प्राप्त किया। जो प्राणी राम नाम के महत्व को नहीं समझते, वे मूर्ख है।

Scanned by CamScanner

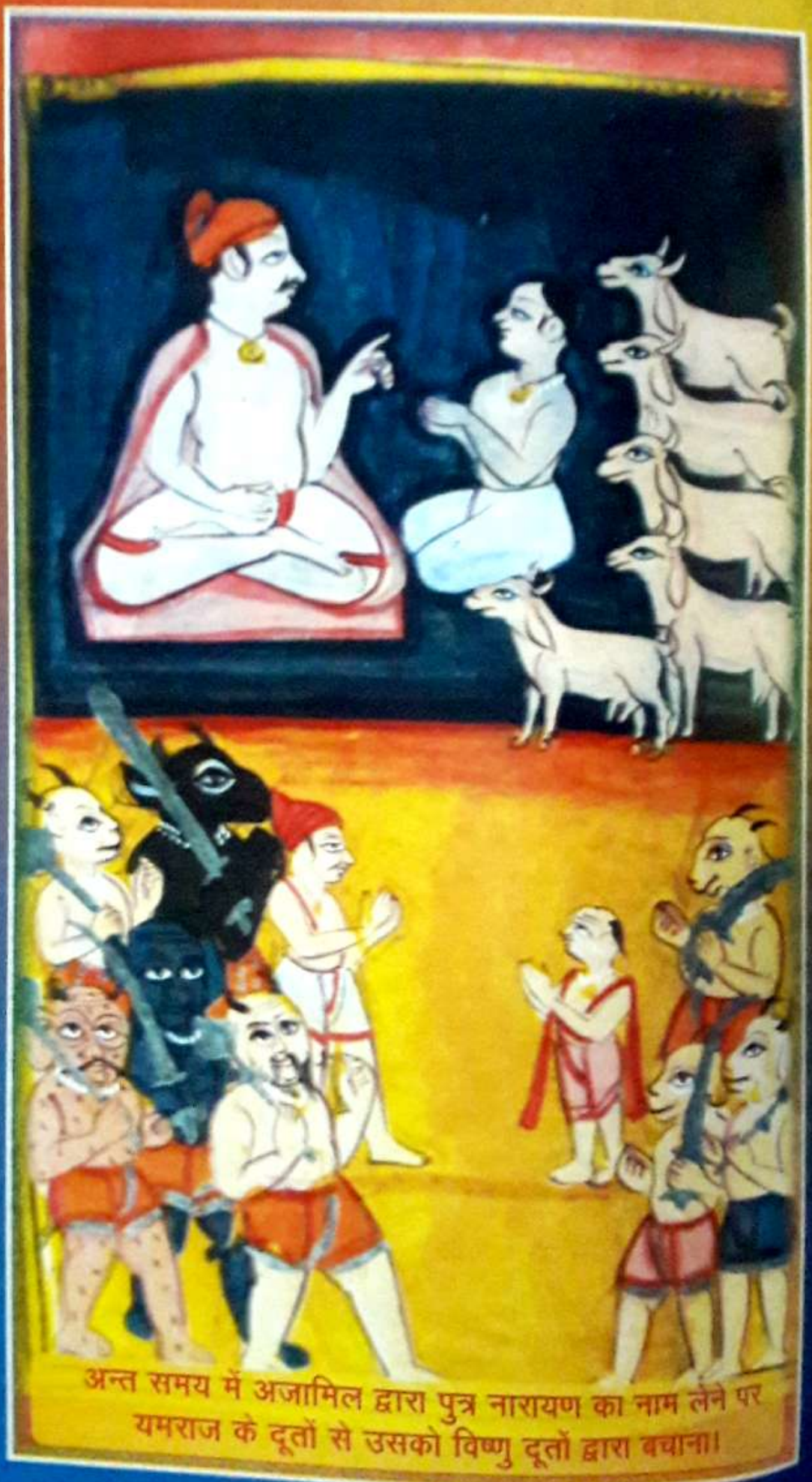

अन्त समय में अजामिल द्वारा पुत्र नारायण का नाम लेने पर यमराज के दूतों से उसको विष्णु दूतों द्वारा बचाना।

Scanned by CamScanner

यमदूतों के खाली हाथ लौटने एवं वहां की स्थिति बताने पर
यमराज द्वारा उन्हें राम नाम महत्व समझाना।
राम नाम लेने वालों को मोक्ष।

Scanned by CamScanner

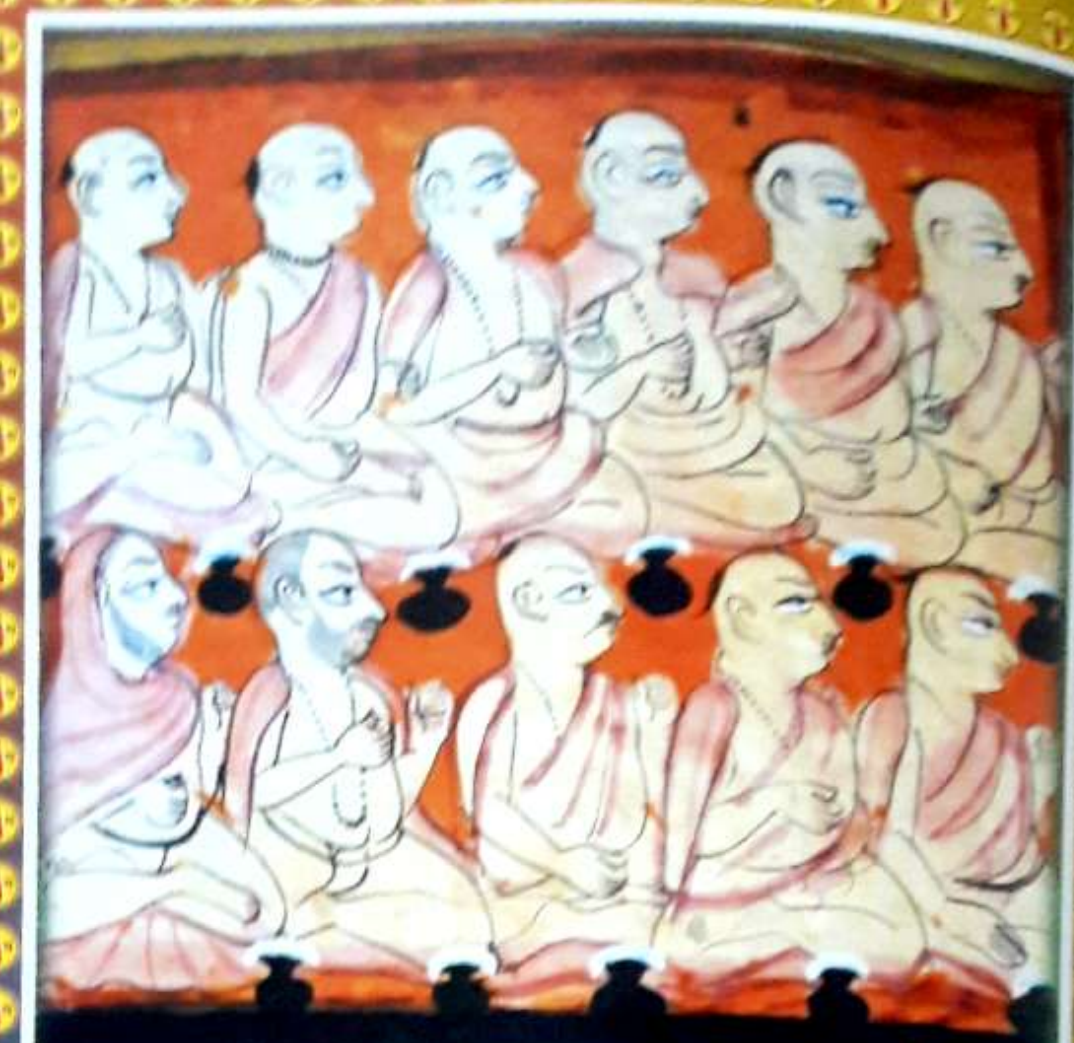

संतों द्वारा राम नाम का स्मरण एवं गणिका को उपदेश।
शुक को पढ़ाते-पढ़ाते गणिका का उद्धार।

Scanned by CamScanner

हनुमान अंजनि को पूता, रामचन्द्र को कहिये दूता।
सो भी रसना राम उचार्‌यौ, राम प्रताप कारज सब सार्‌यौ।।17।।

सरलार्थ : रूद्रावतार अंजनि के पुत्र राम भक्त हनुमान ने अपनी जिह्वा द्वारा नाम स्मरण कर राम प्रताप से सभी कार्यों को सिद्ध कर लिया।

रामचन्द्र जब लंक सिधाया, सिन्धु तरण की करे उपाया।
विश्वामित्र कहे समझाई, राम नाम लिख पत्थर तिराई।।18।।
ये देखो नह केवल कर्ता, अवतारां का कारज सरता।
भक्त हेतु अवतारहिं धरहि, राम रट्यां सब कारज सरहि।।19।।

सरलार्थ : राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका में पधारते समय सेना को पार करने के लिये सिन्धु (समुद्र) तरण का उपाय सोचने लगे। तब राजर्षि विश्वामित्र ने पाषाण खण्डों पर राम नाम अंकित कर पुल निर्माण करने का आदेश प्रदान किया।

अतः मुक्ति प्राप्त करने के इच्छुक प्राणियों! भक्तों के उद्धार हेतु अवतरित होने वाले अवतारी पुरुषों के कार्य भी इस राम नाम के प्रताप से सिद्ध हो गये। इसी प्रकार जो भी प्राणी राम नाम का स्मरण करेंगे, उनके कार्य भी अवश्य सिद्ध हो जायेंगे।

वाल्मीकि बहु जीव सताया, जीव शीव का भेद न पाया।
संता शब्द मरा कही भाख्यो, गहि विश्वास हृदय धर राख्यौ।।20।।
तीजे शब्द उलटि भये रामा, वाल्मीकि का सरिया कामा।
शत कोटि रामायण गाई, राम प्रताप ऐसो है भाई।।21।।

सरलार्थ : हे भाईयों! राम नाम का प्रताप ऐसा है कि जीव शिव के तत्व को नहीं समझने वाले, अनेक प्राणियों की हिंसा करने वाले, वधिक वाल्मीकि ने जब संतों के मुख से राम नाम की महिमा का श्रवण किया तो, उस राम नाम को विश्वास एवं आस्था पूर्वक अपने हृदय में धारण किया।

किन्तु अशुद्ध उच्चारण, मरा-मरा रटते हुए भी तृतीय शब्द में राम शब्द लेकर निरन्तर जप किया।

उसी नाम जप के प्रताप से 'शत कोटि रामायण' की रचना करके वे आदि कवि कहलाये। यह सब राम नाम का ही प्रताप है।

Scanned by CamScanner

पवनपुत्र हनुमान जी द्वारा राम नाम के प्रताप से
लंका गमन, माँ सीता से मिलना एवं लंका दहन।

Scanned by CamScanner

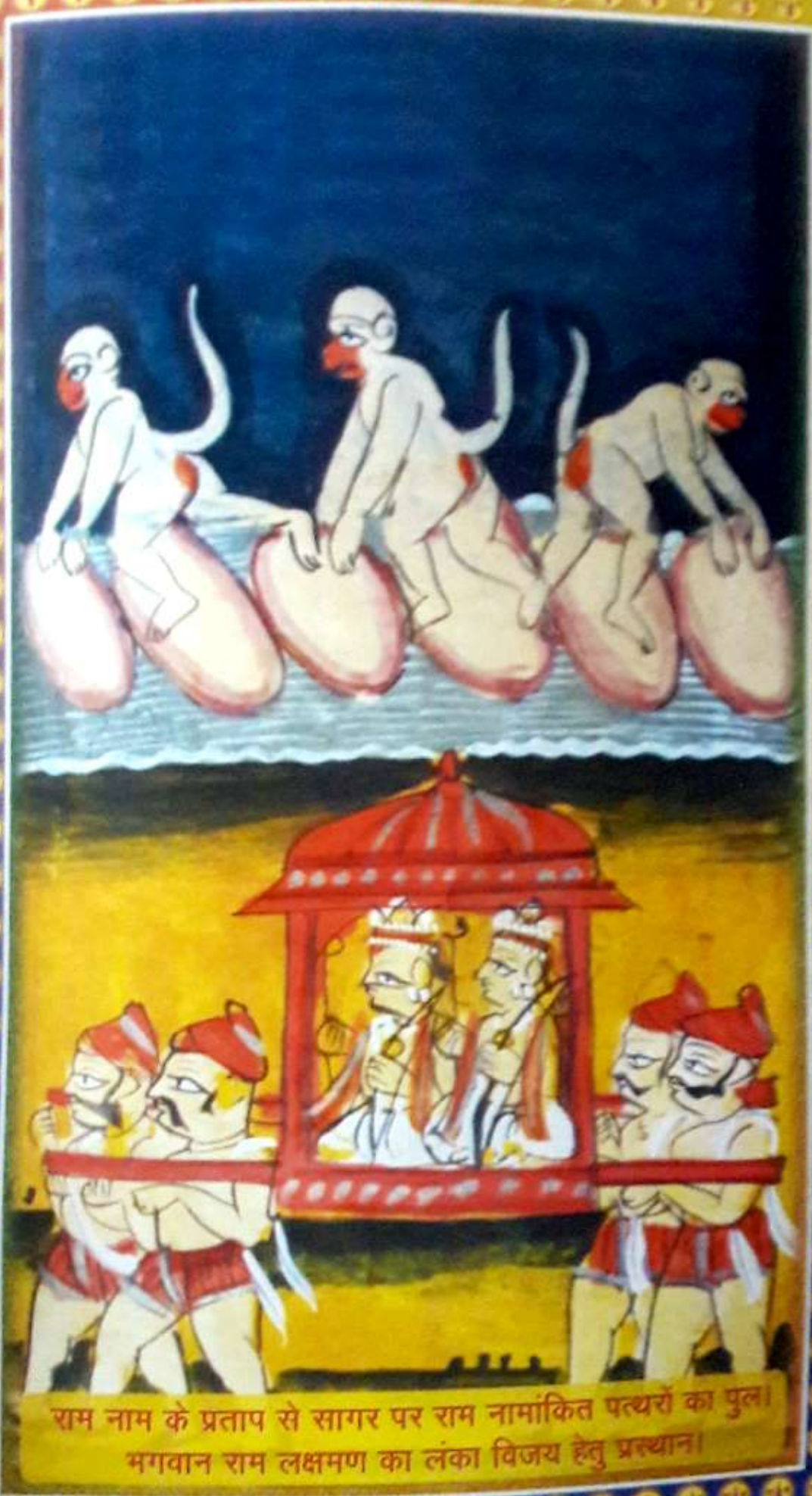

राम नाम के प्रताप से सागर पर राम नामांकित पत्थरों का पुल।
भगवान राम लक्ष्मण का लंका विजय हेतु प्रस्थान।

Scanned by CamScanner

वाल्मीकि द्वारा जीवों को सताना।
संतों द्वारा राम नाम का उपदेश प्राप्त कर भजन करना।

Scanned by CamScanner

बहुरी कहूं पंडवां का जिज्ञ की, महिमा करी कृष्ण हरिजन की।
राम प्रताप पंचाइण बाज्यौ, जोग जिज्ञ जप तप सब लाज्यौ।।22।।

सरलार्थ : पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में भगवान श्री कृष्ण ने भक्तों की महिमा बढ़ाने के लिए स्वयं के श्रीमुख से भक्तों की प्रशंसा की। इसका उदाहरण निम्नांकित है :–

भगवान श्रीकृष्ण ने राजसूय यज्ञ के पूर्णाहूति स्वरूप अपने पाञ्चजन्य शंख को मण्डप के प्रधान द्वार पर रख दिया, जब यज्ञ की पूर्णाहूति हो गई तो इस शंख ने अल्प स्वर में ध्वनि करी। तक द्रोपदी ने श्री हरि से प्रश्न किया कि हे भगवान! इस शंख ने अपने पूर्ण स्वर में ध्वनि क्यों नहीं की?

तब भगवान श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि हे द्रुपद पुत्री! तुम्हारे आगन्तुक अतिथियों में से कोई भक्त अतिथि सम्मान से वंचित रह गया। तब द्रौपदी ने खोज करवाई तो मालूम हुआ कि एक वाल्मीकि (सरगरा) नाम के सन्त भूखे है, उनको जब भोजन करवाया गया तो उस शंख ने बड़े जोर से त्रिलोकी में गूंजने वाले शब्द का नाद किया।

राम प्रताप नीच भयो ऊंचौ, राम बिना ऊंचौ कुल नीचो।
राम जनां की भ्रांति न कीजै, भ्रांति कियां नर नरक पड़ीजै।।23।।

सरलार्थ : राम नाम जप के प्रताप से नीच कुल में जन्म लेने वाला प्राणी भी ऊँचा हो जाता है। जो राम नाम का स्मरण नहीं करता वह उच्च वर्ण का होते हुए भी नीच है।

अतः मुक्ति पाने वाले सज्जनों का कर्त्तव्य है कि भक्तों एवं संतों के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखें। जो भेदभाव रखते है वो अवश्य ही नरक में जाने के अधिकारी होते है।

गहि गज ग्राह समंद में घेर्‌यौ, राम नाम ऊंचै स्वर टेर्‌यौ।
रटत राम छूट्या सब फंदा, मुक्त भयौ तत्काल गयंदा।।24।।
फंद में पड्या पशु भी ध्यावै, नर-गृह बंध्यौ सुद्धि नहिं पावै।
जाकूं कैसे राम उबारै, जनम जनम भव सागर डारे।।25।।

Scanned by CamScanner

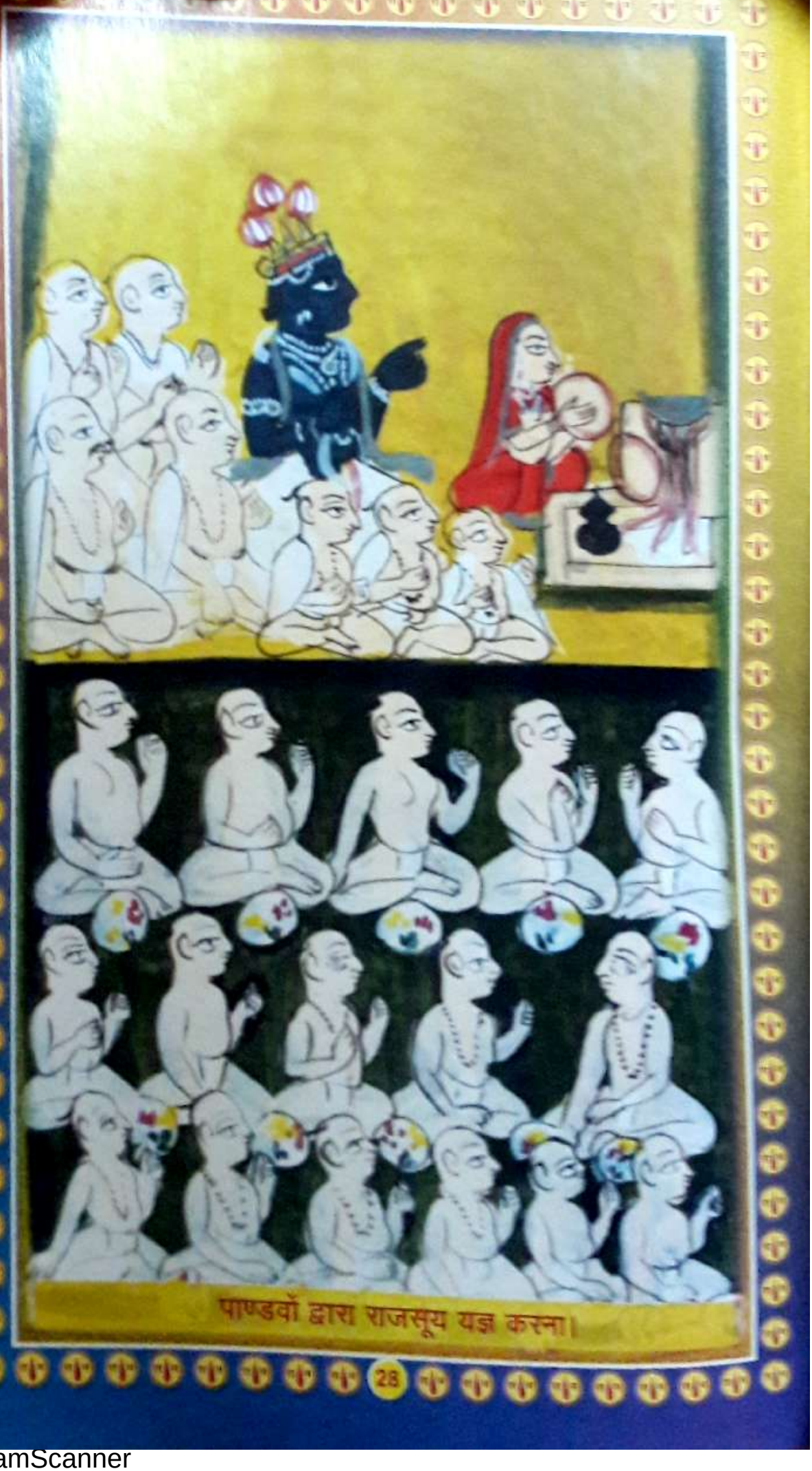

पाण्डवों द्वारा राजसूय यज्ञ करना।

Scanned by CamScanner

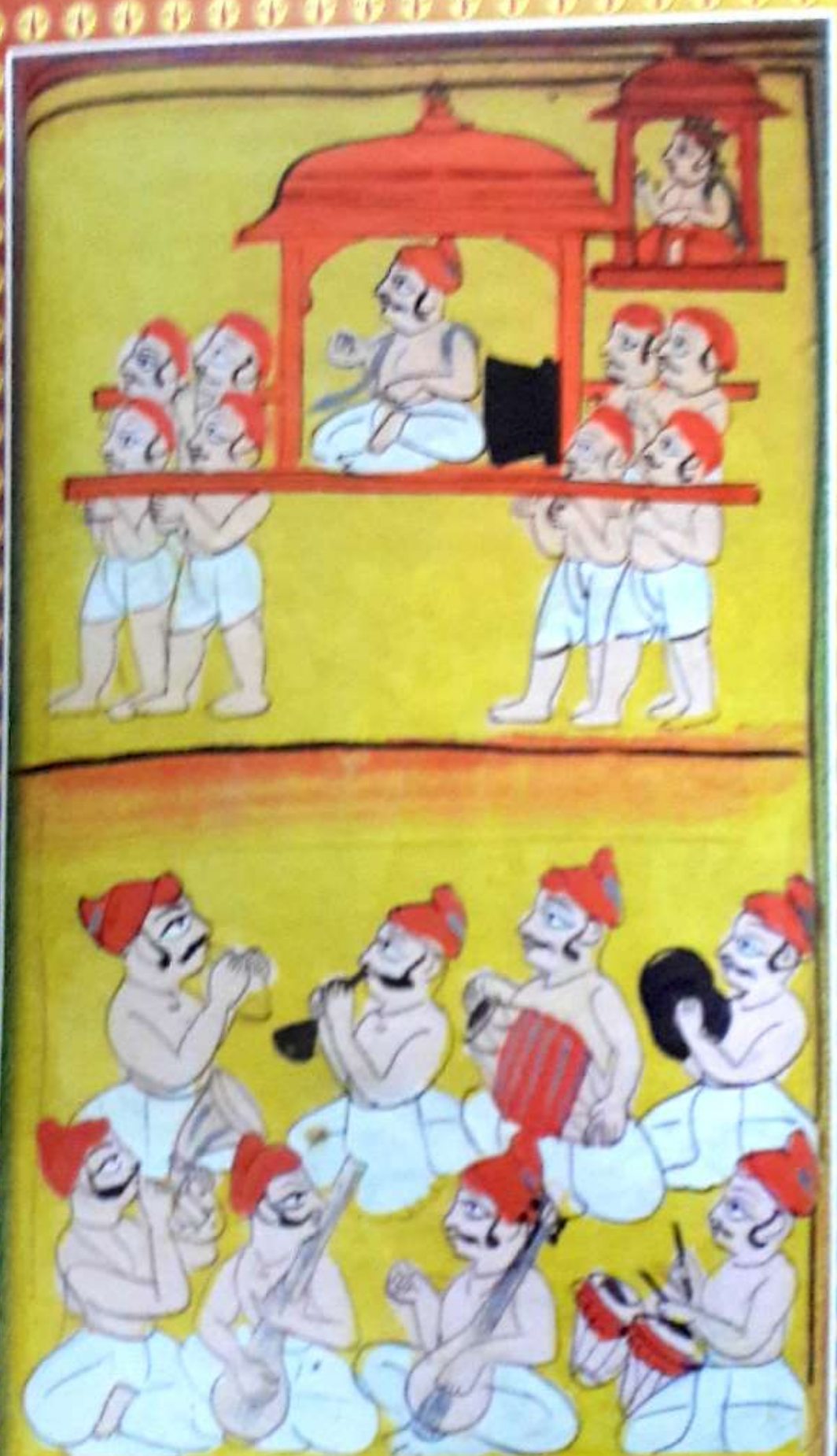

वाल्मीकि (सरगरा) नाम के संत को पधराना एवं उनके
भोजन के बाद पाञ्चजन्य शंख का जोर से बजना।

Scanned by CamScanner

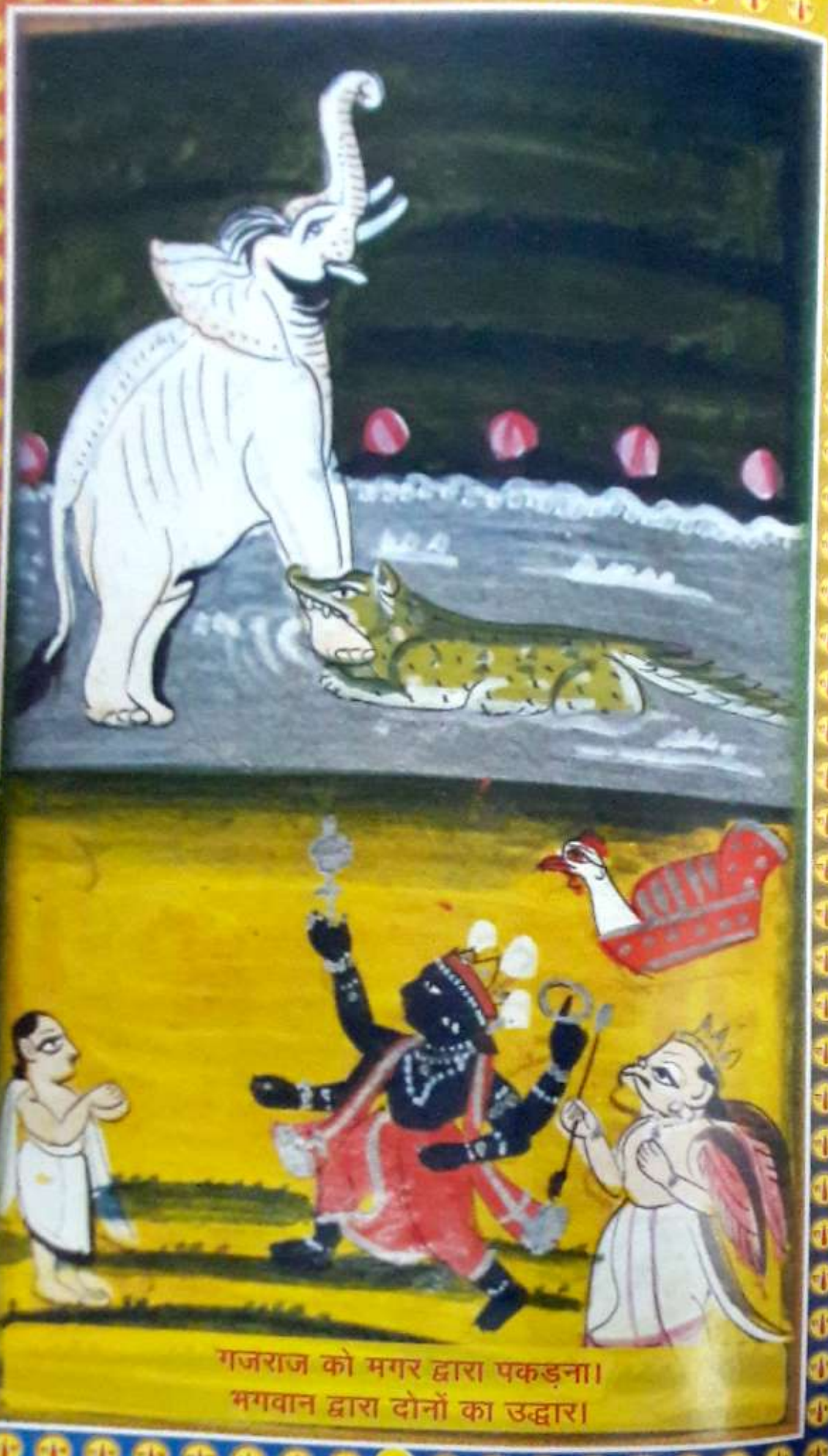

गजराज को मगर द्वारा पकड़ना।
भगवान द्वारा दोनों का उद्धार।

Scanned by CamScanner

सरलार्थ : गजराज अपनी हथनियों के साथ जलाशय में अठखेलियां कर रहा था, दुर्भाग्यवश एक ग्राह (घड़ियाल) ने उस गजराज का पैर पकड़ लिया। बहुत समय तक दोनों के बीच संघर्ष चलता रहा। अन्ततोगत्वा जब गजराज निराश हो गया। तब उसे सहसा राम नाम का स्मरण हो आया।

गजराज ने कमल के पुष्प को सूंड में लेकर प्रभु को समर्पित करते हुए राम नाम का उच्चारण किया। उसी राम नाम के प्रताप से वह गजराज सभी कष्टों से मुक्त हो गया। संकट में पड़े पशु भी समय पर परमात्मा का स्मरण करते है। किन्तु जो मानव गृहरुपी कारागार में बंधक है, राम नाम का स्मरण नहीं करते है तो परमात्मा उनका कैसे उद्धार कर सकते है? परमात्मा ऐसे प्राणियों को चौरासी लाख जीव योनियों में यत्र तत्र भटकने के लिए भेज देते है।

राजा जनक जज्ञ अति कीन्हो, नव जोगेश्वर दर्शन दीन्हों।
राजा मन को सांशो बूझै, तुमकूं भक्ति भेद सब सूझै।।26।।
प्रभु हमकूं देहु बताई, तुम बिन मन को भर्म न जाई।
और सकल साधन भ्रम नाख्यो, सत्य शब्द एक रामहिं भाख्यौ।।27।।

सरलार्थ : निष्काम कर्मयोगियों में कर्मवीर राजा जनक "विदेही' ने यज्ञ किया था, उस यज्ञ में नव योगेश्वर पधारें, राजा ने इनका हृदय से स्वागत किया, तदन्तर राजा ने बद्धाञ्जलि कर प्रार्थना की कि हे प्रभो! भक्ति भेद के रहस्य को आप समझाते है, कृपया मुझे भी आप भक्ति रहस्य समझाइये, जिससे मेरे मन का भ्रम दूर हो जाय। तब योगेश्वर बोले कि हे राजन्! सभी साधनों की अपेक्षा राम नाम ही अटल सत्य है। जिससे पुन: आगमन नहीं होता।

नरप परीक्षत भयौ परायण, शुकदेव सूं शब्द पिछायण।
राम नाम दिन सात पढ़ायौ, तजि नरलोक परम पद पायौ।।28।।

सरलार्थ : राजर्षि परीक्षित को भी परमहंस वीतराग श्री शुकदेव जी ने श्रीमद् भागवत् महापुराण के माध्यम से सात दिन तक नाम महिमा को श्रवण करवाया, जिससे राजा ने अक्षय परमपद को प्राप्त कर लिया।

Scanned by CamScanner

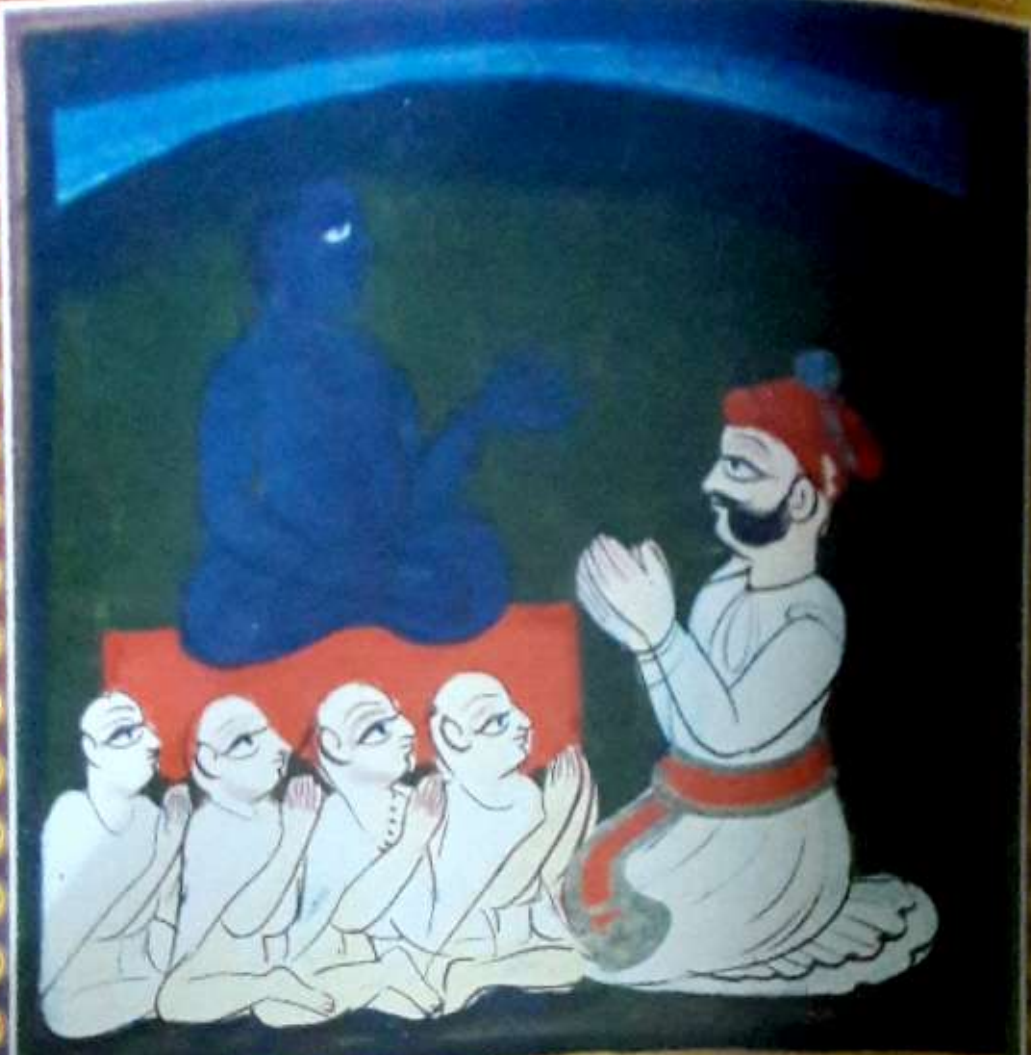

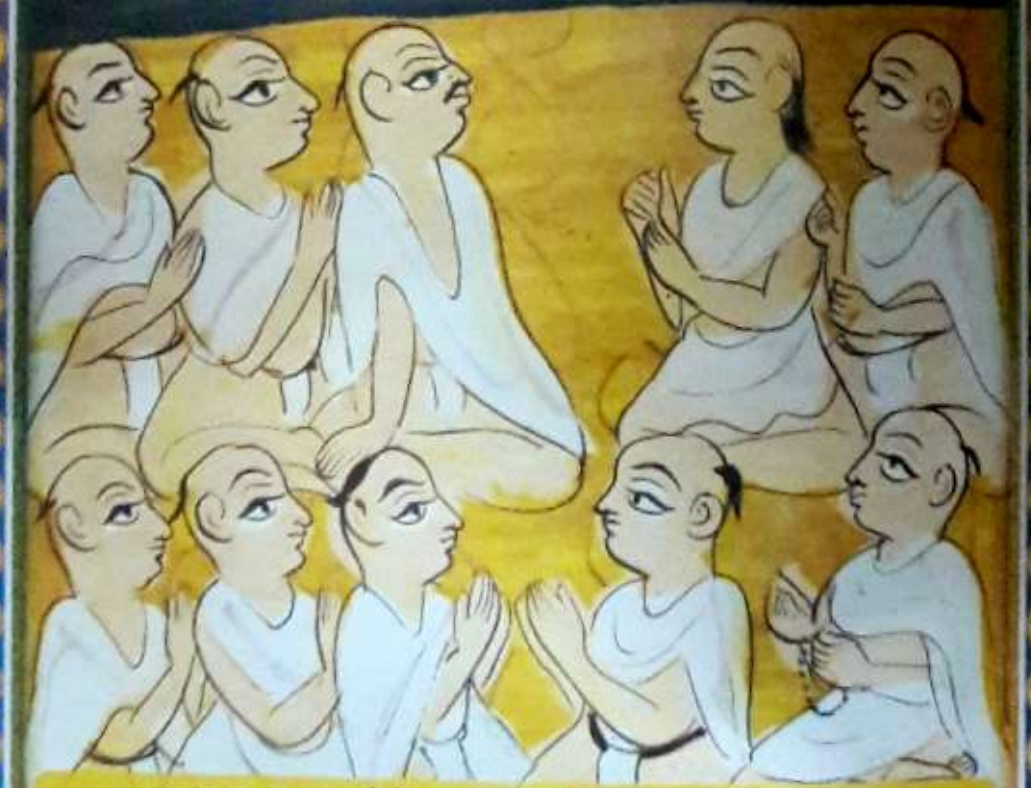

राजा द्वारा नवयोगेश्वरों से मुक्ति का मार्ग पूछना एवं
नवयोगेश्वरों द्वारा एकमात्र राम नाम का उपदेश।

Scanned by CamScanner

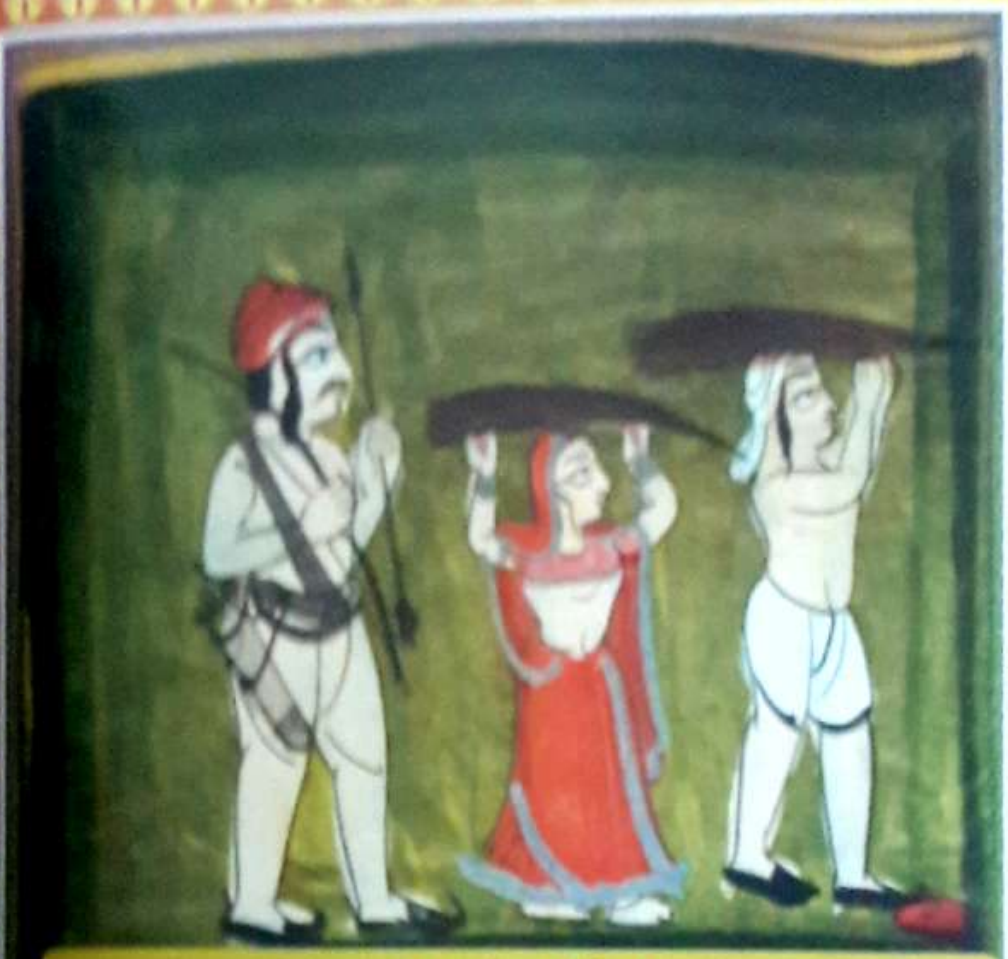

भक्त रांका–बांका।

शुकदेव जी द्वारा शाप ग्रस्त परीक्षित को सात दिवस पर्यन्त राम नाम स्मरण करा मुक्त करना।

Scanned by CamScanner

केता कहूं कहत नहिं आवै, हरि हरिजन को पार न पावै।
च्यार जुगन की कौन चलावै, असंख्य जुगां बिच रामहि गावै।।29।।

सरलार्थ : नाम की महिमा केवल चारों युगों से ही नहीं चल रही है, किन्तु असंख्य युगों से चली आ रही है। भक्त भी अनेकानेक हुए है, और राम नाम का महात्म्य अनेकानेक रूपों में है, उसका मैं वाणी द्वारा कहां तक वर्णन कर सकता हूं।

रांका बांका नामदेव दासा, जिनके एक राम विश्वासा।
राम बिना दूजौ नहिं जांणै, जग में रहेरू उलटी ताणै।।30।।

सरलार्थ : भक्त रांका बांका और नाम देव आदि केवल राम नाम पर ही अटल विश्वास करते थे। राम के बिना उन्होनें कुछ नहीं सीखा। अर्थात् समस्त प्राणियों को राम का नाम रूप ही मानते थे। जो राम नाम की महिमा को तो नहीं जानता, किन्तु विषयान्ध बना हुआ सांसारिक विषय में ही डूब अभिमान के साथ भक्तजनों से विरोध करता है, वैसे की दुर्गति होती है।

तुलसी पत्र लिख्यो रक्कारा, ता सम ओर नहिं कोई भारा।
सबही द्रव्य धर्म भयौ हलकौ, राम बिना भोइल को भलकौ।।31।।

सरलार्थ : भक्त नामदेव ने किसी धनी का गर्व का भंजन कर राम भक्त बनाने के लिये अहैतुकी कृपा करके तुलसी पत्र के ऊपर अर्द्ध नाम 'रकार' शब्द को अंकित करके उसकी तुलना में स्वर्ण दान लेने लगे, किन्तु नामांकित तुलसी पत्र के बराबर सम्पूर्ण द्रव्य तथा अन्य उपार्जित पुण्य भी नही तुल सके तब वह सेठ राम नाम के महात्म्य को समझकर भगवदभक्त बन गया और सांसारिक पदार्थों को अभ्रक एवं शुक्ति रजवत समझने लगा।

भक्ति भानु प्रकटे रामानन्द, ताके रहे सदा उर आनन्द।
द्वादश शिष्य भये बड़ भागी, जिनकी प्रीत राम सूं लागी।।32।।

सरलार्थ : सदा ब्रह्मानन्द में निमग्न रहने वाले प्राणियों के हृदयाकाश में भक्ति रूपी सूर्य-प्रकाश स्वरूप रामानन्द जी अवतरित हुए। उनके सहस्त्रों शिष्य वर्ग में द्वादश शिष्यों के नाम उल्लेखनीय है।

Scanned by CamScanner

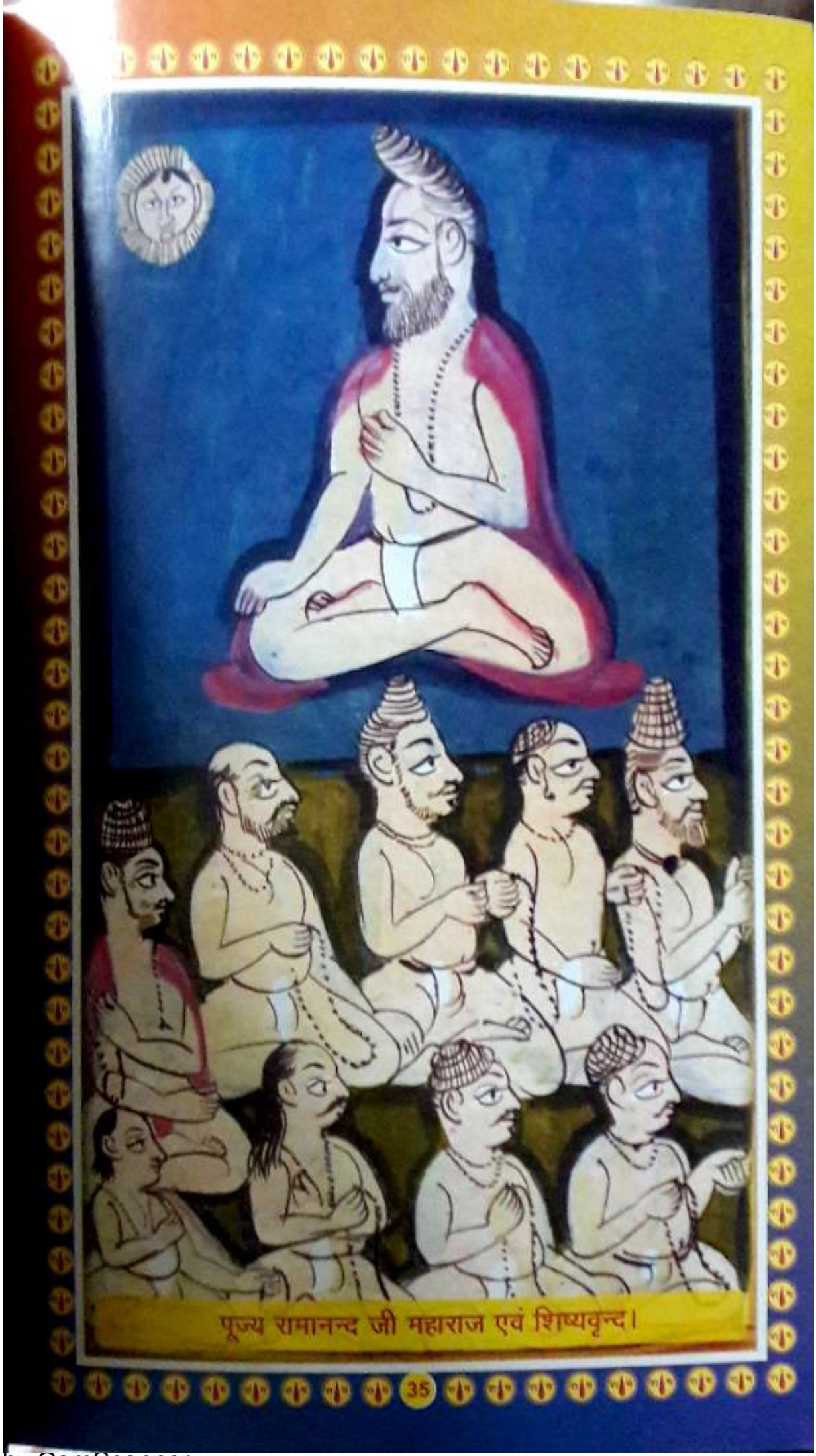

पूज्य रामानन्द जी महाराज एवं शिष्यवृन्द।

Scanned by CamScanner

दास कबीरा भयै उजागर, राम प्रताप भक्ति का आगर।
राम राम रटि राम समाया, बहु जीवन कूं भेद बताया।।33।।
कृष्णदास पयहारी कहिये, राम बिना दूजौ नहिं गहिये।
अग्रश्याम जंगी अरू तुरसी, देव मुरारी भया बंध कुरसी।।34।।
कीता घाटम कूबा केवल, राम राम रट भया निकेवल।
राम राम रटियो हरिदासा, जगत जाल सूं भयो उदासा।।35।।
ज्ञानी गर्क भया अरू परसा, राम सुमिरि जग जाण्यौ निरसा।
दादूदास जन्म कुल नीचै, राम रटत पहुंच्यौ पद ऊंचै।।36।।
नीच ऊंच कुल भेद विचारै, सो तो जनम आपणों हारै।
संतां के कुल दीशै नांहि, राम राम कह राम समाहीं।।37।।
परशुराम खोजी बाजींदा, हरिदास जन हरि का बंदा।
पहली नीचा कर्म कमाया, राम सुमिर उज्ज्वल पद पाया।।38।।

सरलार्थ : महात्मा कबीर, पयहारी, कृष्णदास, अग्रश्याम, देवमुरारी, कीता, घाटम, कूबा, केवल, हरिदास, दादू, परशुराम, खोजी बाजिंद, रैदास आदि जितने भी भक्त हुए है वो सब छोटी जाति में पैदा हुए है।

वीतराग स्वामी श्री रामचरण जी महाप्रभु फरमाते है कि संतों का जाति, वर्ण नहीं होता है। वे तो उच्च गोत्री है। उपरोक्त संत महापुरूषों की जीवनियाँ भी भक्तमाल ग्रन्थ में विस्तार पूर्वक है।

संतदास कलि भया कबीरा, राम भजन, रत संत सुधीरा।
पर उपकार धरि जिन देहा, छके ब्रह्म रस रहे विदेहा।।39।।

सरलार्थ : कलियुग में संत कबीरदास जी संतदास जी के रूप में भक्ति का प्रचार करने के लिये अवतरित हुए। संतदास जी महाराज रामभजन में रत रहते थे, और दूसरों के उपकार के लिये शरीर धारण किया। शरीर में रहते हुए भी विदेही थे।

कृपाराम संत का बाला, ज्यूं कबीर घर भया कमाला।
दया देश परमारथ पूरा, निर्मल चित्त भजन कूं सूरा।।40।।

सरलार्थ : जिस प्रकार महात्मा कबीर साहब के कमाल साहब सुपुत्र थे, ठीक इसी प्रकार संतदास जी महाराज के भी कृपारामजी महाराज सुपुत्र थे। श्री कृपाराम जी की प्रकृति बहुत ही सौम्य, दयालुता, परोपकारमय थी, भगवद् भक्ति आदि अनेक गुण आपमें जन्म से विद्यमान थे।

Scanned by CamScanner

पू. कृष्णदास जी पयहारी जी महाराज।

अग्र, श्याम, जंगी, तुरसी आदि रामानन्दी वैष्णव संत
राम भजन करते हुए।

Scanned by CamScanner

दीक्षा से पूर्व पूज्य हरिदास जी महाराज

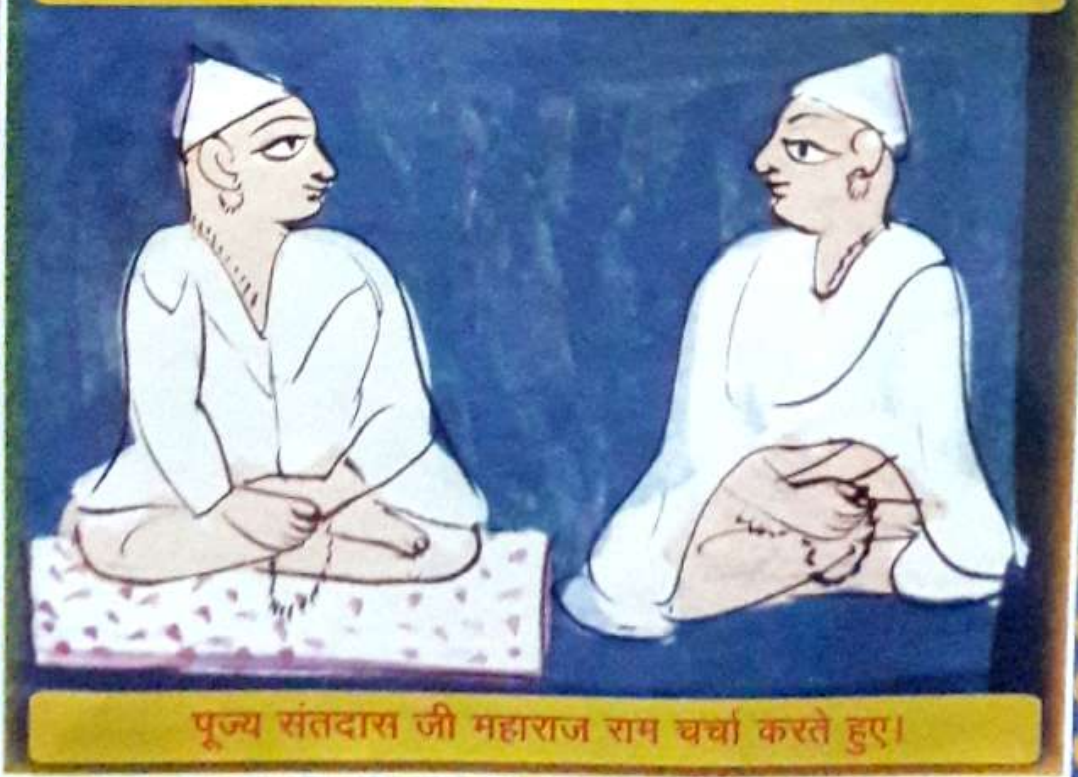

पूज्य संतदास जी महाराज राम चर्चा करते हुए।

Scanned by CamScanner

पूज्य संतदास जी महाराज द्वारा राम भजन एवं परोपकार के लिये भिन्न-भिन्न देह धारण करना।

Scanned by CamScanner

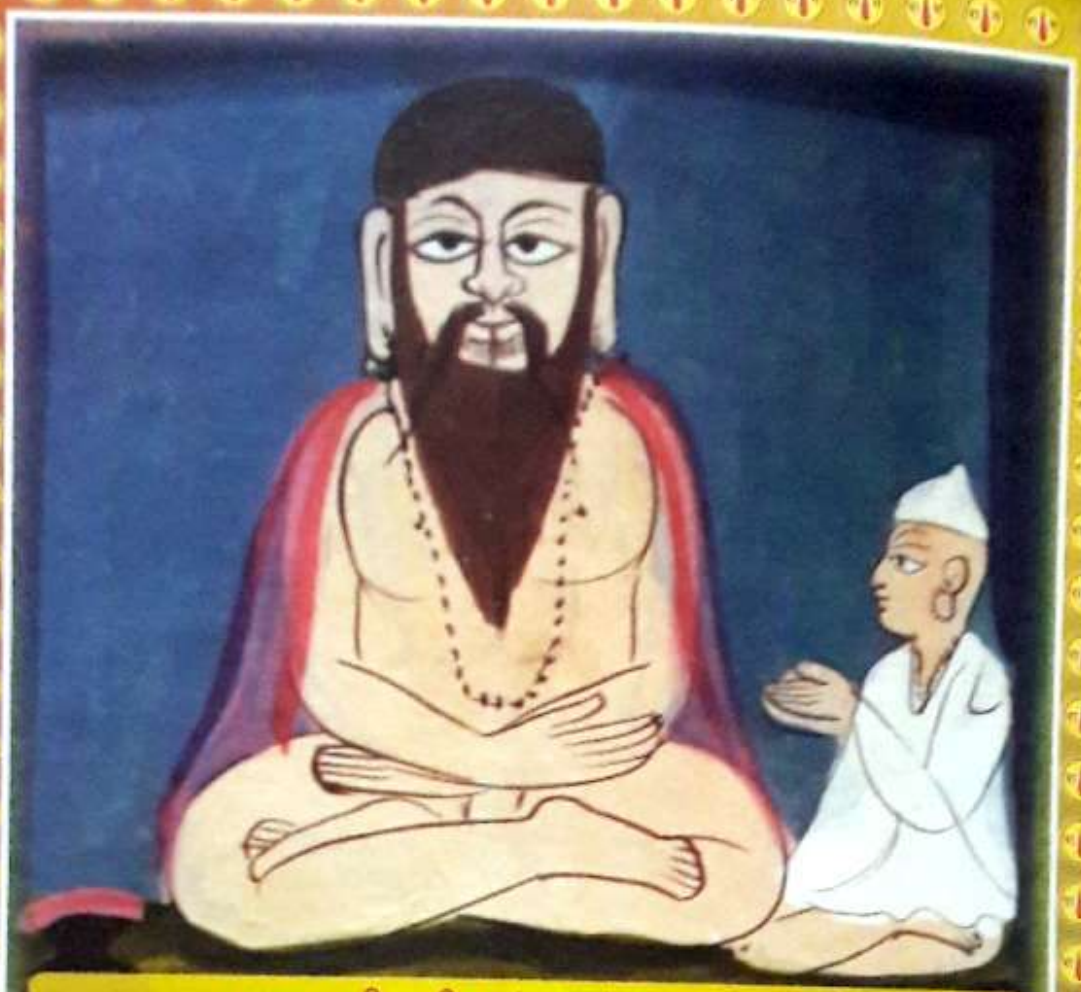

पूज्य कबीर जी एवं उनके पुत्र कमाल जी

कबीर जी एवं कमाल जी का पू. संतदास जी महाराज एवं कृपाराम जी महाराज के रूप में पुन: प्रकट होना

Scanned by CamScanner

जिनकी कृपा हम निधि पाई, राम नाम की कीरति गाई।
ऐसो कुण जो कीरति गावै, हरि हरिजन को पार न पावै।।41।।

सरलार्थ : स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु फरमाते है कि उन्हीं श्री कृपारामजी महाराज की कृपा से मैनें राम–नाम का अमूल्य खजाना प्राप्त किया। ऐसा कौन प्राणी है जो भगवान और भक्तों के गुणों का वर्णन अपनी वाणी द्वारा कर सके।

सायर कहो ऐसो कुण थागै, जितौ पियौ अपनी तृष भागै।
राम–संतां का अंत न आवै, आप आपकी बुद्धि सम गावै।।42।।

सरलार्थ : मान सरोवर में अथाह पानी भरा है, किन्तु जिसकी जितनी प्यास होगी वह उतना ही जल पी सकेगा। अतः भगवान और भक्त के गुण भी अनन्त है, किन्तु भगवद् भक्त अपनी बुद्धि के अनुसार भगवान एवं भक्त तथा रामनाम के गुणगान गाते है।

राम प्रताप सुनौ अब ऐसो, भजतां भयौ कहूं सो तेसो।
राम रटत गुप्ता रस चाखै, सन्त शब्दां में प्रगट भाखै।।43।।

सरलार्थ : राम नाम का प्रताप ऐसा है जो जिह्वा द्वारा स्मरण करते ही अपना प्रभाव दिखा देता है, और राम नाम को रटते रटते गुप्त रस की प्राप्ति हो जाती है। इन्हीं भजनानन्द सन्तों के प्रभाव का वर्णन शब्दों द्वारा प्रगट करता हूं।

प्रथम राम रसना सूं गावै, मन कूं पकड़ एक घर लावै।
राखे सुरति शब्दहिं मांहि, शब्द छांडि कहूं अन्त न जाहिं।।44।।
तब रसना शिर छूटै धारा, चलै अखण्ड नहिं खण्डै लगारा।
जल पीवन की श्रद्धा नांहि, मति यो अमृत दूर होई जाहि।।45।।

सरलार्थ : स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु नाम जप की विधि एवं उससे प्रगट होने वाले ब्रह्मानन्द का प्रभाव अनुभव जन्य परावाणी द्वारा दिग्दर्शन कराते है।

पद्मासन में बैठकर मन को एकाग्र करके सर्वप्रथम रसना द्वारा नाम जप करें। सुरति को राम नाम शब्द में ही लगाये रखें। शब्द को छोड़कर क्षणिक मात्र के लिये भी विषयाकार मनोवृत्ति न बनावें।

इसी प्रकार रसना (जिह्वा) द्वारा स्मरण करते करते जिह्वा के अग्र भाग से नाड़ी द्वारा धारोष्ण दुग्ध की भांति रस का फुंवारा छूटता है और वह अखण्ड तेज धारा की तरह चलता रहता है। जो थोड़ा सा भी खण्डित नहीं होता है। उस रसामृत पान का प्रभाव यह होता है कि जल पीने की इच्छा नहीं होती। क्योंकि डर रहता है कि यह अमृत धारा कहीं खण्डित न हो जाय।

Scanned by CamScanner

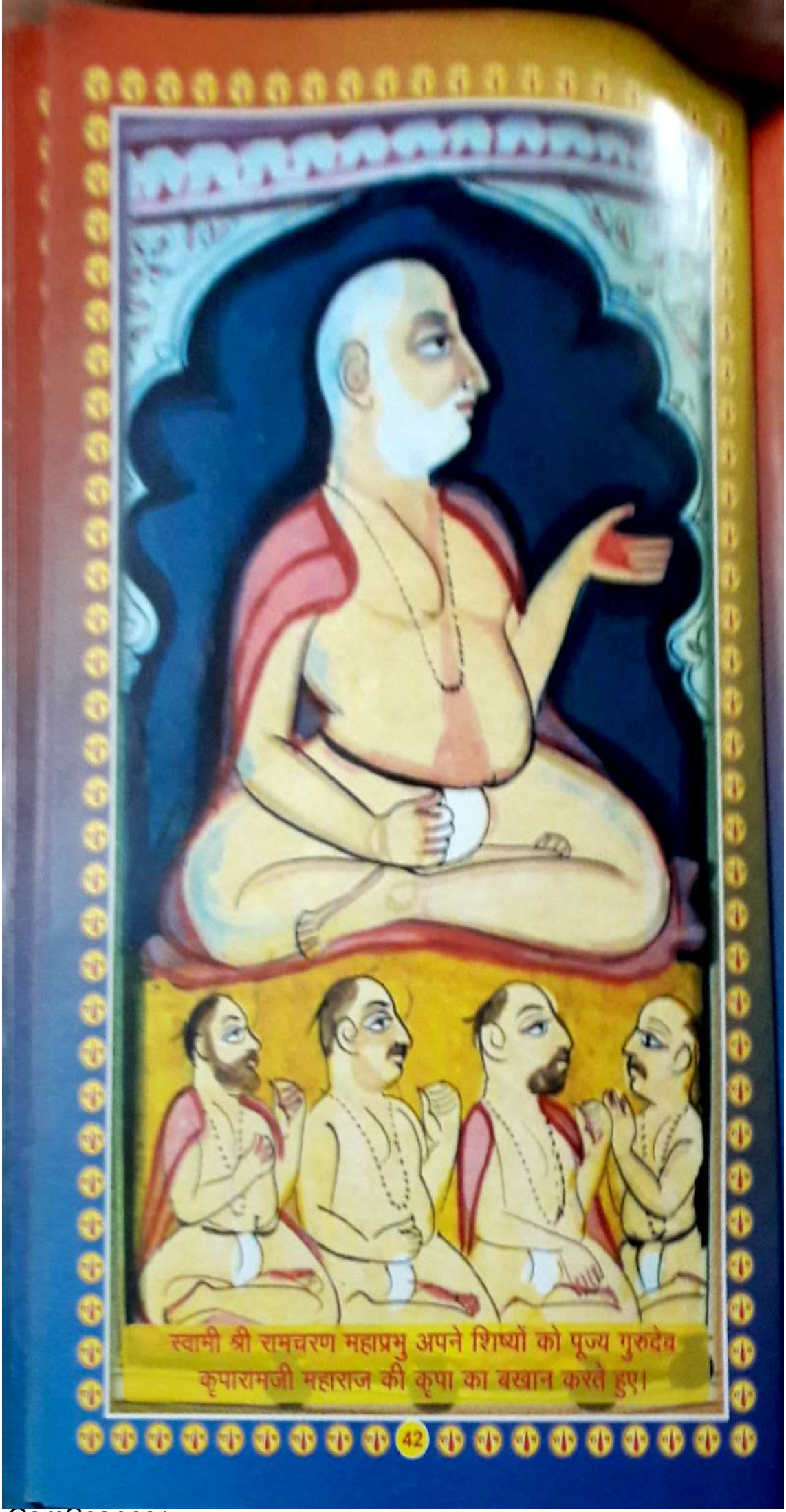

स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु अपने शिष्यों को पूज्य गुरुदेव
कृपारामजी महाराज की कृपा का बखान करते हुए।

Scanned by CamScanner

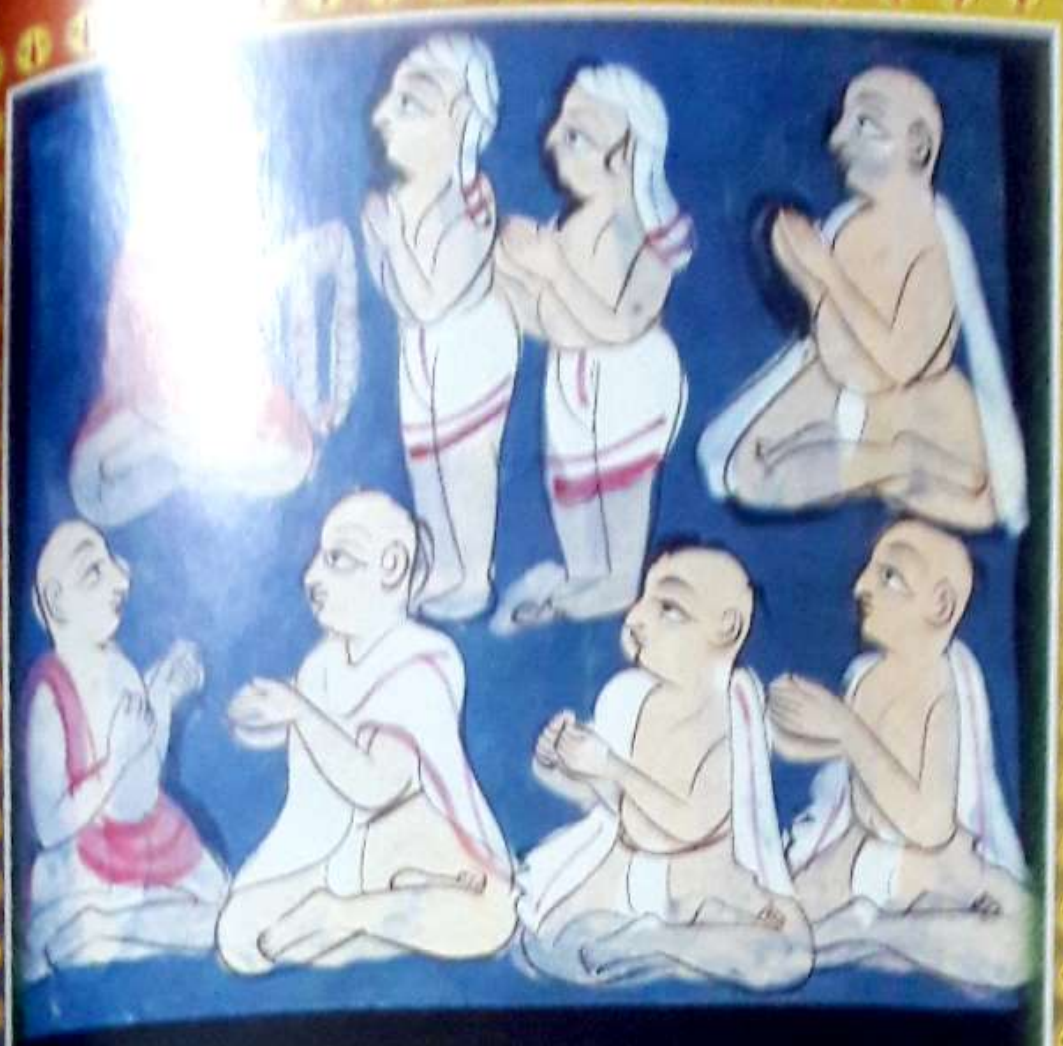

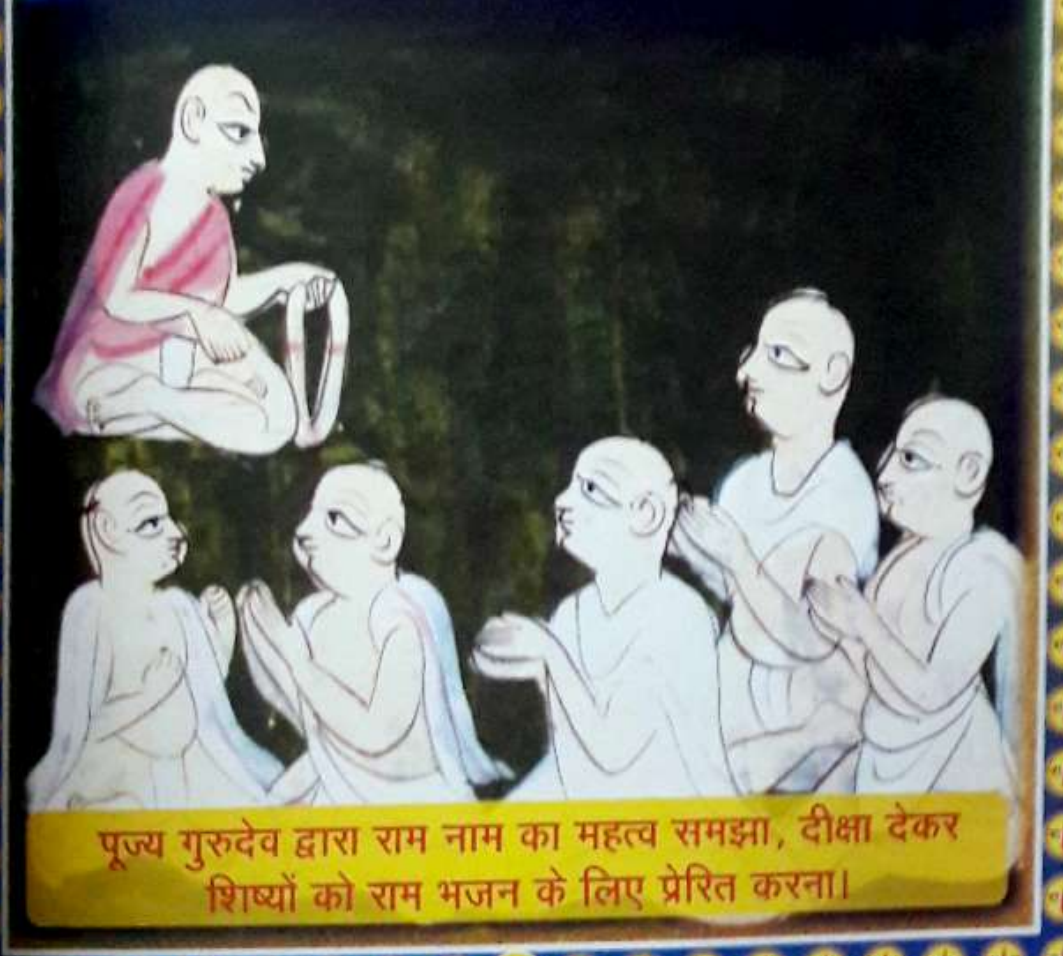

पूज्य गुरुदेव द्वारा राम नाम का महत्व समझा, दीक्षा देकर
शिष्यों को राम भजन के लिए प्रेरित करना।

Scanned by CamScanner

पद्मासन लगाकर राम भजन करना।
भगवान द्वारा भक्तों की सराहना करना।

Scanned by CamScanner

रस पीवत क्षुधा सब भागी, कंठा शब्द टगटगी लागी।
नाड़ी नाड़ी में चले गिलगिलि, सुख धारा अति बहे सिलसिली।।46।।

सरलार्थ : मन की एकाग्रता से प्राणों का निरोध हो गया, इससे उस अमृत धारा द्वारा प्राणों के धर्म, भूख–प्यास की निवृत्ति हो गई। कंठ स्थान में शब्द द्वारा टगटगी लग जाती है। तत्पश्चात् प्रत्येक नाड़ी में गिलगिलि चलने लगती है। अर्थात् सरिता के प्रवाह की तरह सुख की धारा बहने लग जाती है।

मुख सूं कछु न उचरै बेना, लग्या कपाट खुलै नहिं नैना।
श्रवणा चर्चा सुणै न कोई, कंठ ध्यान यह लक्षण होई।।47।।

सरलार्थ : लौकिक विषय वार्ता यदि कोई चलाता है तो वीतरागी को वह वार्ता विष के समान प्रतीत होती है, तथा उसके प्रत्युत्तर के लिये मुख से एक भी शब्द का उच्चारण नहीं हो पाता और ब्रह्मानन्द में इतना मग्न हो जाता है कि नेत्रों की पलकें भी बन्द हो जाती है, और नेत्र लौकिक रूप को देखने के लिए तनिक भी तैयार नहीं होते। अर्थात् मन और मस्तिष्क ज्ञान मग्न हो जाने से नेत्र एवं श्रवण द्वार भी बन्द हो जाते है।

शब्द के रसना से सरकने पर कंठ में ध्यान होने लगता है। ये उसके मूल लक्षण है।

कंठ कै ध्यान कंप कंपी जागै, रोम रोम सीतंग सो लागै।
हियौ गद्गदे श्वांस न आवै, नैणां नीर प्रवाह चलावै।।48।।

सरलार्थ : जब कंठ स्थान में ध्यान होने लग जाता है तब शरीर में कंपकंपी जाग्रत हो जाती है, रोम रोम में शीतलता का उद्भव हो जाता है, अर्थात् रोम रोम में से राम राम राम की अव्यक्त ध्वनि होने लग जाती है। हृदय गद्गद् होने के साथ ही साथ श्वांसो का अवरोधन होने लग जाता है और प्रभु प्रेम प्रवाह से नेत्रों से प्रेम के आंसू बहने लगते है।

एक दिवस इक भया तमासा, कंठ हृदा बिच उठयौ हुलासा।
ज्यों पालाकी डोरणि छूटी, हिरदे सीर सूखम रस ऊठी।।49।।

सरलार्थ : रसना से शब्द कण्ठ में प्रवेश करने के पश्चात् हृदय में प्रवेश करता है उस अवस्था के लक्षण इस प्रकार है कि एक दिन ऐसा आश्चर्य जनक तमाशा होता है कि कंठ और हृदय के मध्य हर्षोद्रेक होने लगता है।

जैसे हम वन क्षेत्र में जल को रोकने के लिए एक पाल बांध देते है, किन्तु जल प्रवाह की तेज गति होने के कारण जल पाल को तोड़कर तेजी से बहने लग जाता है, इसी भांति कंठ और हृदय के मध्य में सूक्ष्म अमृत रस की धारा प्रवाहित होने लग जाती है।

Scanned by CamScanner

शब्द ब्रह्म हृदय किया वासा, ज्यों रैण अंधेरी चन्द्र प्रकाशा।
भर्म कर्म सांशो गयो भागी, हिरदै ध्वनि अखण्ड लिव लागी।।50।।

सरलार्थ : शब्द ब्रह्म का हृदय रूपी आकाश में ऐसा प्रकाश होता है कि मानों अंधेरी रात्रि में चन्द्रमा का प्रकाश होता है। इस प्रकाश से शुक्ति रजतवत्, रज्जु सपर्वत् सांसारिक भ्रमनाएं जितनी भी है तथा उनकी लौकिक कर्मो की निवृत्ति तुरन्त हो जाती है।

हृदय में अजपा जाप की ध्वनि तेज धारावत् अविछिन्न रूप से लगने लगती है।

कहा कहूं या सुख की महिमा, और सुख सब दीशे पलमा।
हिरदै ध्यान ध्वनि जब होई, दूजो साधन रहै न कोई।।51।।

सरलार्थ : स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु फरमाते है कि मैं इस ब्रह्मानन्द के सुख की महिमा का वाणी द्वारा क्या वर्णन कर सकता हूं? क्योंकि उस ब्रह्मानन्द से अन्य जागतिक वैषयिक–पञ्चाशब्दादि विषयों के क्षणिक सुख अल्प प्रतीत होते है तथा हृदय में ध्यान करते अजप्पा जाप की ध्वनि सूक्ष्मरूप से जब होने लगती है तो अन्य लौकिक साधन स्वत: निवृत्त हो जाते है।

हिरदा सूं लै धरणी गई, नाभि कमल में चेतन भाई।
शब्द गुंजार नाड़ि सब जागै, रोम रोम में होई रही रागै।।52।।

सरलार्थ : जब हृदय से ध्यान बढ़कर चौथी–चौकी–नाभि–स्थान में पहुंचता है, तब नाभि कमल में कुण्डलिनी की जागृति हो जाती है। शब्द के गुंजन द्वारा सम्पूर्ण सूक्ष्म स्थूल नाड़ी जाल झंकृत होने लगते है। रोम रोम में नाना प्रकार विधि की राग–रागनियों का उद्‌भव हो जाता है।

नौसे नारी मंगल गावै, तहां मन भंवरा अति सुख पावै।
शीतल भई सबै ही काया, शब्द ब्रह्म रस अमृत पाया।।53।।

सरलार्थ : नौ सो नाड़ियां जब मंगल गान गाने लगती है तब मन रूपी भंवरा ब्रह्मानन्द रूपी सुख सागर में निमज्जित हो जाता है। सुरति शब्द के संयोगजन्य ब्रह्म रस रूपी अमृत प्राप्त कर लेता है तब सम्पूर्ण काया शीतल हो जाती है।

अब तो शब्द गिगन कूं चढ़िया, पछिम घाटि होइ कै अनुसरिया।
घाटी बीस मेरु की छेकी, इक बीसै गढ़ गया विशेखी।।54।।

Scanned by CamScanner

सरलार्थ : इसके पश्चात् शब्द पश्चिम घाटी होकर ब्रह्माण्ड में चढ़ जाता है, अर्थात् बीसों कशेरूकाओं के मध्य में सुषुम्ना नाड़ी रहती है और उसके आजु–बाजू में इंगला–पिंगला नाम की नाड़ियां रहती है। मेरूदण्ड की बीसों मणिकाओं को छेककर त्रिकुटी संगम में शब्द पहुंच जाता है।

पहली बैठा त्रिकुटी छाजै, जाके ऊपर अनहद बाजै।
त्रिवेणी तट ब्रह्म न्हवाया, निर्मल होय आगे कूं ध्याया।।55।।

सरलार्थ : भौंहों के बीच में त्रिकुटी स्थान है, उसके ऊपर सहस्त्रार दल चक्र में अनहद बाजे बजते है, उसी त्रिवेणी में शब्द सुरति के साथ निमज्जित होकर अत्यन्त निर्मल बन आगे को प्रस्थान करता है।

दोहा

इंगला पिंगला सुखमणा, मिले त्रिवेणी घाट।
जहां झांझै जल झूलि के, निर्मल होय निराट।।3।।
अब त्रिवेणी न्हाइके, किया गगन प्रवेश।
तीन लोक सूं अलध सुख, यह कोई चौथा देश।।4।।

सरलार्थ : इंगला (इड़ा) पिंगला, सुषुम्ना रूपी त्रिवेणी संगम घाट पर ब्रह्माल्हाद में झूलकर निर्मल बना हुआ शब्द सुरति के साथ गगन में प्रवेश करता है। स्वर्ग मृत्यु एवं पाताल तीनों लोकों से भिन्न यह कोई अवर्णनीय सुख है। और यह चतुर्थ देश कहलाता है।

चौपाई

अब चौथे घर पहुंता जाई, जहाँ का चहन मैं कहूं सुणाई।
घरर-घरर अनहद घररावे, परम ज्योति दामणि झलकावे।।56।।

सरलार्थ : अब चौथे घर में प्रवेश हुए महात्मा का–तुरीयपद का निर्विकल्प समाधि का, अनिर्वचनीय कथन करता हूं –

जिस प्रकार मेघ (बादल) ध्वनि करते है ठीक इसी प्रकार घर्र घर्र का अनहद अव्यक्त नाद होता है और उसमें परम आनन्द की ज्योति चमकती है।

सुषमण नीर लूंब झड़िलाई, भीजत सुरति गर्क होई जाई।
अर्ध ऊर्ध जहां कमल प्रकासा, सुरति भंवर होई करत बिलासा।।57।।

सरलार्थ : उस तुरीय पद में सुषुम्ना नाड़ी से निकले अमृतमयी नीर के बूंदों की झड़ी लग जाती है–उसमें शब्द के साथ सुरति भींजकर ब्रह्मानन्द में मग्न हो जाती है। अर्ध्व–ऊर्ध्व भाग में सहस्त्रार दल कमल विकसित हो जाता है और शब्द के साथ सुरति वहां पर भ्रमर बन विलास करने लगती है।

Scanned by CamScanner

धुरै अखण्ड अनाहद बाजा, प्राण, पुरुष जहां तख्त विराजा।
झिलमिल, झिलमिल नूर प्रकासै, अनन्त कोटि रवि प्रगट्या भासै।।58।।
या तो बात अतौल है भाई, मुख सूं कह्या तोल दै जाई।
पवन कहो कैसे गह हाथा, कैसे भरै गगन की बाथा।।59।।
रूप वर्ण कैसो तड़का को, ऐसो कहा बखानो जाको।
हाक बाक रहे कहत न आवै, पहुंच्या होई सोही भल पावै।।60।।

सरलार्थ : बांसुरी, वीणा, शंख, पटह, मेघ आदि की तरह अनहद दिव्य वाद्ययंत्रों की अव्यक्त ध्वनि होती है, वहां पर प्राण पुरुष अलौकिक दिव्य सिंहासन पर आरूढ़ रहता है, उस प्राण पुरुष का झिलमिल, झिलमिल नूर प्रकाश होता है। अनन्त कोटि रवि के प्रकाश को भी लजाने वाला है।

तुरीय पदारूढ़ महात्मा निर्देश करते है कि यह वार्ता तो अलौकिक, पारमार्थिक सत्ता वाली, अतुलनीय है, मुख से उच्चारण करने पर तो उसका मूल्यांकन हो जायेगा। जैसे वायु को मुट्ठी में बन्द नहीं किया जा सकता तथा आकाश को वस्त्र में नहीं बांधा जा सकता। यह तुरीय पद की समाधि की वार्ता भी वैसी ही है।

प्रातःकालीन उषाकाल अरूणोदय का प्रकाश दिव्य होता है वैसा ही उस परम धाम का प्रकाश अत्यन्त तेजस्वी है। अर्थात् सागर में डुबकी लगाने पर शरीर के चारों ओर जल ही जल हो जाता है, जैसे सूर्य की किरणों में प्रकाश ही प्रकाश है। ऐसा ही यह अत्यन्त अचरज भरा, अकथनीय परमतुरीय पद है। जो, महात्मा, ईश्वर की कृपा, गुरुकृपा, शास्त्रकृपा एवं अन्तःकरण की कृपाओं से तुरीय पद को पहुंच गये है वहीं इसकी परिभाषा को समझ सकते है।

दोहा

अनहद गरजै नभ झरै, दामिनि ज्योति उजास।
रामचरण सुनि सायरां, हंसा करत निवास।।5।।

सरलार्थ : ब्रह्माकाश में अनहद नाद की दिव्य गर्जना होती है, अमृतरस के झरने झरते है, असीम विद्युत प्रकाश होता है। त्रिविध शरीरों से परे, पञ्चकोषातीत तीनों अवस्था रहित अविद्या काम्य कर्मो से विमुक्त हुआ जीव ही शिव रूप से निर्मल हंस बनकर ब्रह्म समुद्र के तट पर निवास करता है।

Scanned by CamScanner

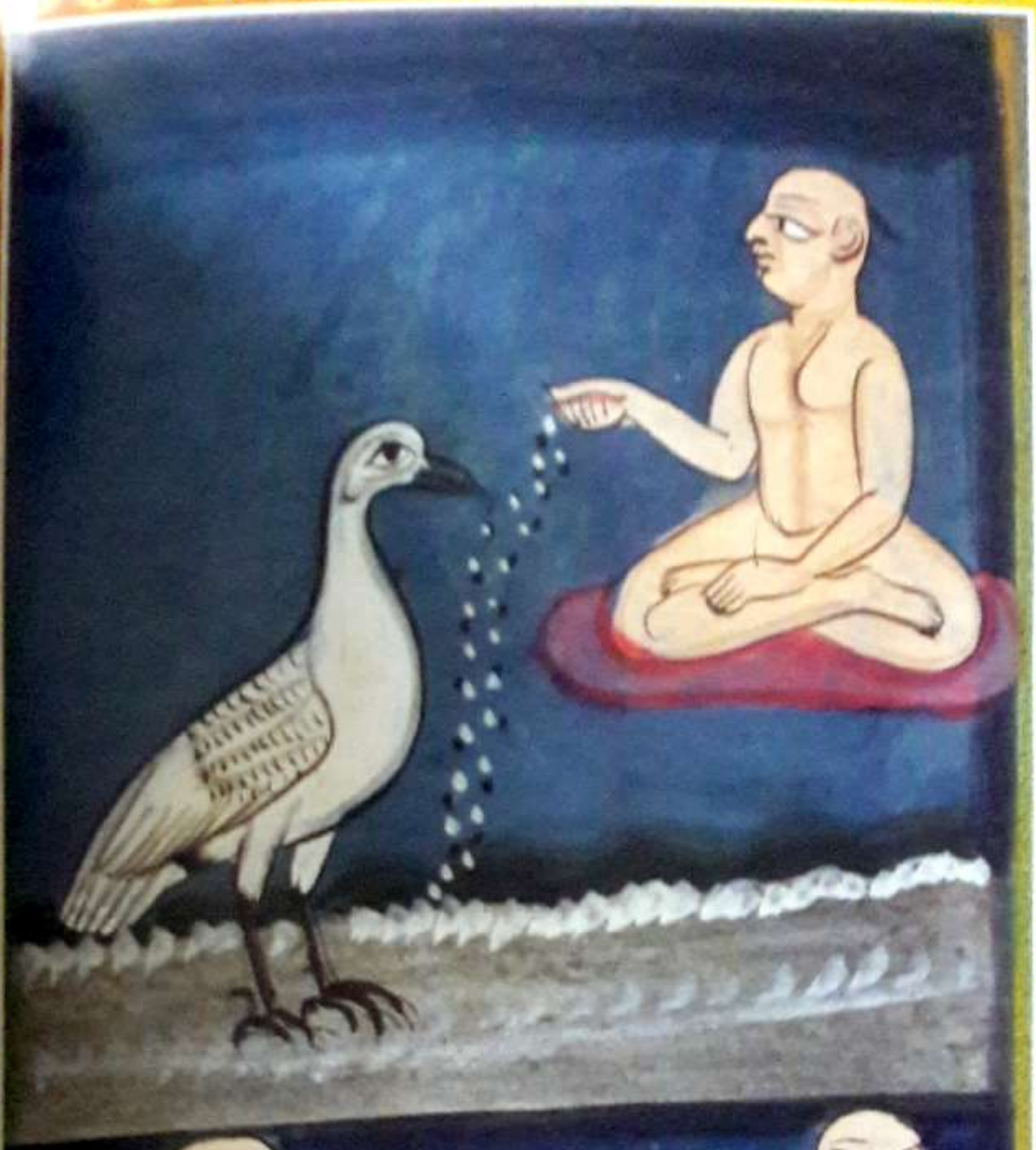

आत्मारूपी हंस द्वारा सुखमण मोती का आहार करना।
श्री महाराज अगम की वार्ता शिष्यों एवं जिज्ञासुओं को सुनाते हुए

Scanned by CamScanner

चौपाई

सायर तट हंस बैठा जाई, सायर हंस में रह्या समाई।
ओत पोत भया द्वैत न दर्शे, संत गरक ब्रह्म सुख कूं पर्शे।।61।।
ब्रह्म पर्श्या की दशा बताऊं, बाहिर के लक्षण पिछनाऊं।
जांके रंक एक ही राऊ, माया सेती करे न भाऊं।।62।।

सरलार्थ : उस परम दिव्य ब्रह्म समुद्र तट पर उपरोक्त जीव रूपी हंस बैठा हुआ है और वह ब्रह्म समुद्र जीव रूप हंस में समाविष्ट हो जाता है। जैसे घट को जल में निमग्न करने पर भीतर बाहर जल ही जल होता है, इसी भाँति जीव रूपी हंस और ब्रह्म रूपी समुद्र ओत प्रोत हो जाते है।

द्वैत की प्रतीति नहीं होती, जीव शिव रूप ऐक्य, अद्वैत, अवाङ्ग मनस गोचर, नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वरूप, त्रिगुणातीत, सर्वकारण कार्य का साक्षी, अप्रमेय, परमानन्द, सत्चित नित्यानन्द स्वरूप प्रज्ञानघन, निर्विशेष ब्रह्मसुख में मन सदा निमग्न रहता है।

ऐसे ब्रह्म स्पर्श किये हुए महात्मा के बाह्यलक्षण बताता हूं। वे राजा रंक को एक समझने वाले अनित्य, अनिवर्तनशील, क्षणिक मायिक पदार्थो से स्वल्प मात्र भी ममत्व नहीं करते है।

जाकै अन्दर ब्रह्म रस बूढ़ा, सकल विह्वार होई गया झूंठा।
कनक कामिनी करै न नेहा, छक्या ब्रह्म रस रहे विदेहा।।63।।

सरलार्थ : उन महात्माओं की दृष्टि में सारा व्यवहार मिथ्या है, जो कंचन कामिनी स्थूल माया और मान–बड़ाई, ईर्ष्या, सूक्ष्म माया इनसे प्रीति नहीं करते। वे विदेही अवस्था को प्राप्त हुए ब्रह्मानन्द में प्रतिपल निमग्न रहते है।

जैसे बूंद मिली सायर में, कैसे पकड़ि सकै कोई कर में
जीव ब्रह्म मिलि भया समाना, ब्रह्म मिल्यां कर्म करै न आना।।64।

सरलार्थ : सिन्धु का एक भाग बिन्दु जब समुद्र में मिल जाता है तो उसको दुनियां की कोई शक्ति पुनः पृथक नहीं कर सकती। इसी तरह अविद्योपाधि काम्य कर्मो से विमुक्त जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं से परे, स्थूल–सूक्ष्म के कारण शरीरों से रहित अन्नमय, प्राणमय, मनोमय विज्ञानमय, आनन्दमय, पञ्चकोषातीत, अविद्या, अस्मिता, रागद्वैष, अभिनिवेश, पञ्चक्लेशातीत, जीव ब्रह्म स्वरूप बन जाता है। तब लौकिक, वैदिक, सम्पूर्ण कर्म अपने आप छूट जाते है।

Scanned by CamScanner

दोहा

एह चहन दरश्याँ बिना, मति कोई छोड़ो ध्यान।
रामचरण इक राम बिन, सबही फोकट ज्ञान।।6।।

सरलार्थ : स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु फरमाते है कि राम के बिना सारा संसार झूंठा है। इस दोहे के भावों से भरे लक्षण जब तक प्रकट न हो जाय तब तक नाम जप का परित्याग नहीं करें।

रामचरण भज रामकूं, ब्रह्म देश कूं जाय।
जहां जम जुरा का भय नहिं, सुख में रहै समाय।।7।।

सरलार्थ : वीतराग आचार्य स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु फरमाते है कि राम नाम का जप जो भी प्राणी करते है वो ब्रह्म देश को प्राप्त हो जाते है। उस अगम्य स्थान पर जन्म–मृत्यु–जरा, व्याधि का तनिक मात्र भी भय नहीं होता। जीव वहां पहुंचकर परम सुख में समा जाता है।

रामचरण कहे राम को, बड़ो प्रताप जग मांहि।
अनन्त कोटि जन ऊधर्‌या, भजै सो भर्मे नांहि।।8।।

सरलार्थ : स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु इस ग्रन्थ के उपसंहार में आदेश प्रदान करते है कि राम नाम इतना प्रबल प्रतापी है कि जिसके प्रताप से अनन्त प्राणियों का युग युग में कल्याण हुआ है और जब तक चन्द्र, सूर्य और वसुन्धरा रहेगी, तब तक होता रहेगा।

प्रभु कृपा है कि भजन करने वालों का पुनरागमन नहीं होता।

।। इति ग्रन्थ नाम प्रताप सम्पूर्ण ।।

(दोहा–8, चौपाई–64, सर्व–72, ग्रन्थ–2)

।। राम ।।

Scanned by CamScanner

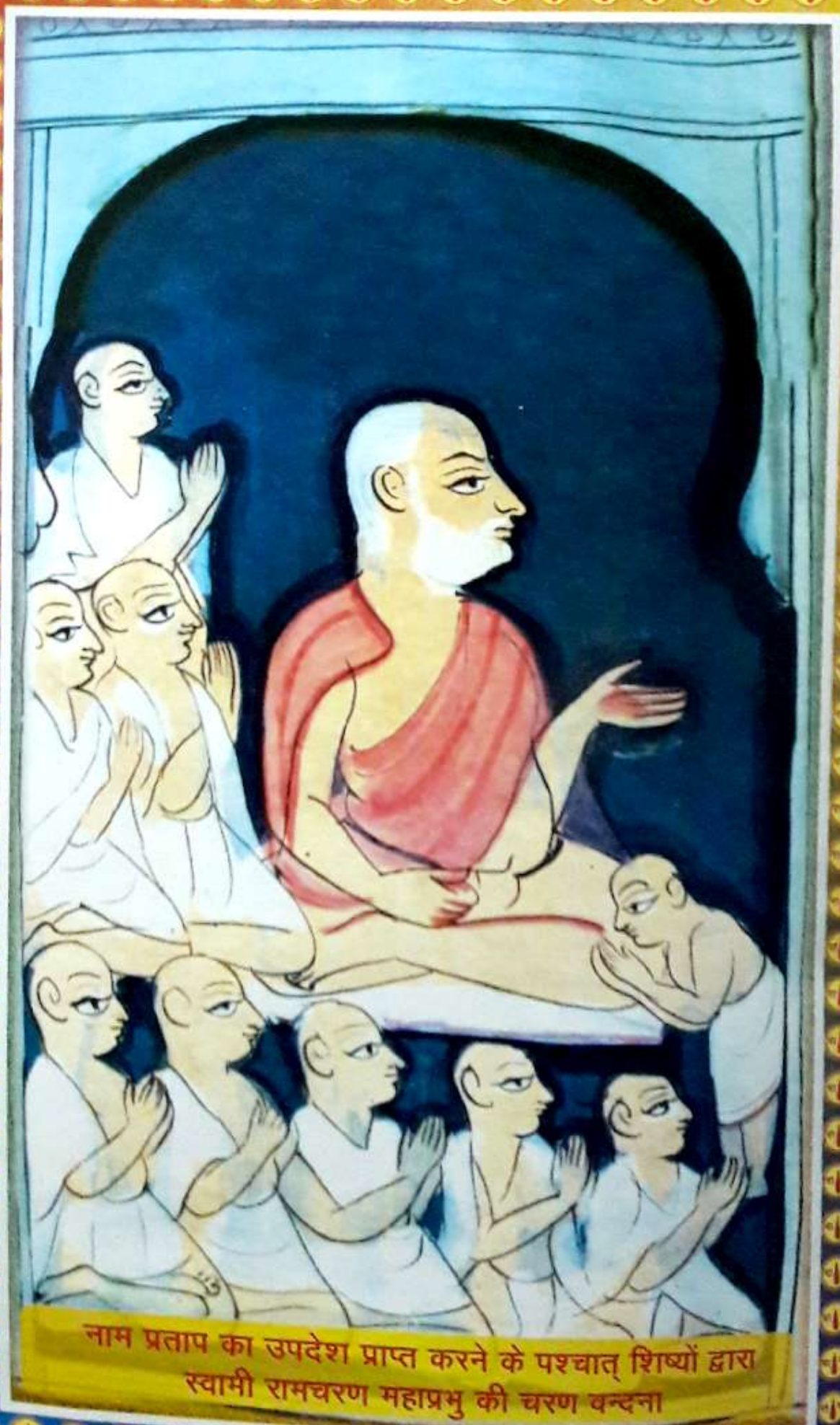

नाम प्रताप का उपदेश प्राप्त करने के पश्चात् शिष्यों द्वारा
स्वामी रामचरण महाप्रभु की चरण वन्दना

Scanned by CamScanner

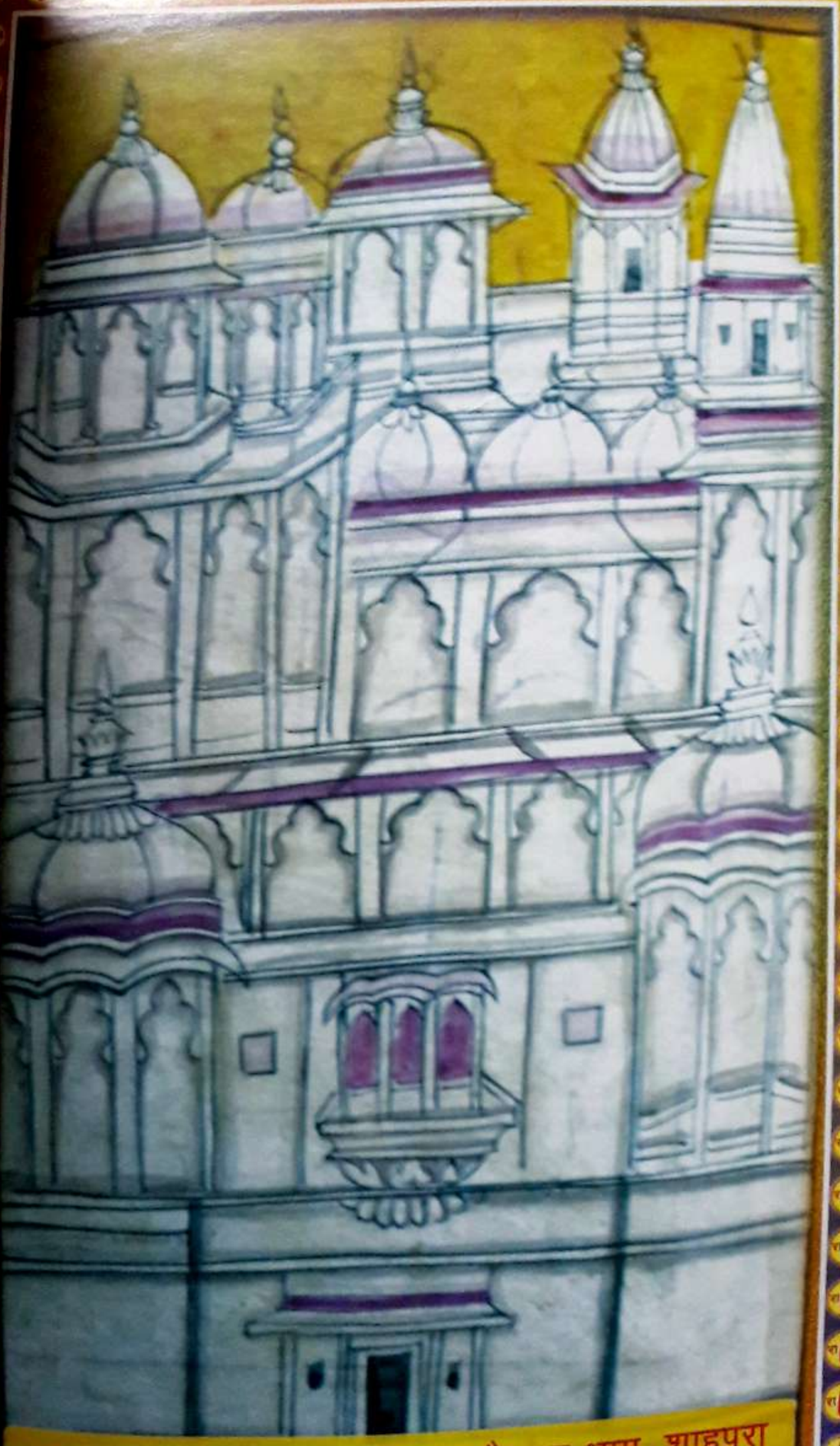

महाप्रभु की समाधि–श्री रामनिवास बैकुण्ठ धाम, शाहपुरा

Scanned by CamScanner

रामस्नेही चिकित्सालय

एवं अनुसंधान केन्द्र

स्वामी रामचरण मार्ग, भीलवाड़ा (राजस्थान) फोन-(01482) 231100, 238640-43

भीलवाड़ा का सबसे बड़ा एवं सभी सुविधाओं युक्त चिकित्सालय

66,000 वर्ग फुट पर बना 250 शैय्यायाओं की सुविधा युक्त

24घण्टे चिकित्सा सुविधा

एम.आर.आई. मशीन एवं डिजिटल एक्सरे

सिटी स्केन, सोनोग्राफी–2डी व 4 डी कलर डॉपलर, दवा बैंक,
ब्लड बैंक, लेबोरेट्री व महिला प्रसूति सेवा दर पर संचालित

- ऑर्थोपेडिक विभाग
- गेस्ट्रोस्कोपी
- स्त्री व प्रसव विभाग
- लेप्रोस्कोपी
- जनरल सर्जरी
- एण्डोयूरोलॉजी
- मेडिसिन विभाग
- रेडियोलॉजी
- डायलिसिस
- ब्लड बैंक
- शिशु विभाग
- सिस्टोस्कोपी एवं थेरेटरोस्कोपी

Scanned by CamScanner